वेद प्रकाश

१२/७४

हम सुखी कैसे रहें ?

विश्व का प्रत्येक मानव सुख चाहता है। सुख की इच्छा रखने वालों के लिए महामना चाणक्य महाराज के कथनानुसार "न सन्तोषात् परं सुखम्" अर्थात् सन्तोष को छोड़कर सुख प्राप्त नहीं हो सकता। अपने पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात् ईश्वर द्वारा प्रदत्त फल में पूरा आत्मविश्वास रखना ही सन्तोष है।

किसी भी सुन्दर सी चीज को देखकर फिसल जाना सन्तोष नहीं अपितु असन्तोष की पराकाष्ठा है। साथ ही हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाना भी सन्तोष की विडम्बना है।

परन्तु सन्तोष कहाँ करना है कहाँ नहीं करना, इस पर आचार्य चाणक्य कहते हैं कि—

सन्तोषः त्रिषु कर्तव्यः स्वदारे भोजने धने।
त्रिषु नैव कर्तव्यः विद्यायां जपदानयोः॥

अर्थात् तीन चीजों में सन्तोष करना है और तीन में नहीं। अपनी स्त्री, अपना भोजन, अपना धन; इन तीनों में पूर्ण सन्तोषी रहना है और विद्या प्राप्ति में, जप करने में और दान देने में सन्तोष नहीं करना है।

अतः सुख प्राप्ति का एकमात्र साधन सन्तोष ही है।

बोध-कथा

बीमारी जिसका इलाज नहीं

एक व्यापारी के यहाँ घोड़ी और उसकी बछेड़ी थी। अचानक एक दिन घोड़ी को एक दुर्घटना में भयंकर चोट लगी। सब तरह के इलाज और देखभाल के बावजूद घोड़ी को बचाया नहीं जा सका, वह दम तोड़ बैठी। उसके पीछे उसकी बछेड़ी बच गई। उसके कारोबार में एक किसान की भी भागीदारी थी। व्यापारी उस बछेड़ी को लेकर किसान के यहां गया, बोला—इसकी माँ घोड़ी तो एक दुर्घटना में मर गई है, अब यह इसकी बछेड़ी बच गई है, तुम्हारे पास कई गाय-बैल-जानवर हैं, उनके साथ यह बछेड़ी भी पल जाएगी। किसान ने उसकी बछेड़ी को पालना मंजूर कर लिया।

कुछ ही महीने तक अच्छी खूराक और देखभाल से वह बछेड़ी पनप गई। सेवा-टहल से जल्दी उसकी कद-काठी निकल आई। बछेड़ी को एक अच्छी घोड़ी के रूप में पनपते देखकर उस किसान के यहां कई व्यापारी उसे खरीदने आए। चर्चा सुनकर घोड़ों का एक व्यापारी भी वहां आया और मुंह-मांगे पैसे देकर वह बछेड़ी खरीद ले गया।

बछेड़ी के बिकने के कई दिन बाद वह किसान व्यापारी के पास गया। बड़े दुःखी स्वर में बोला—"सेठ जी, अफसोस है कि आप की बछेड़ी बची नहीं, बीमार पड़ी और वह जाती रही।"

व्यापारी ने कहा—"आप हमारे पुराने साथी हैं आप से ऐसी उम्मीद नहीं थी। बीमार पड़ी थी तो खबर देते, उसका पूरा इलाज कराता। खैर, उसका हाड़ मांस ही दिखा दो।"

किसान व्यापारी को मुर्दाघर ले गया, जहां जानवरों की लाशें पड़ी थीं। उसने कई दिन पहले मरे एक बैल की हड्डियां व्यापारी को दिखायीं। व्यापारी ने ध्यान से उसे जांचा। बोला—"इसमें सींग कहां से आ गए ?" किसान बोला—"क्या करूं—इसे यही तो बीमारी हो गई थी, जिसका इलाज नहीं हो सका।"

प्रस्तुति—**नरेन्द्र विद्यावाचस्पति**

ओ३म्

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ४४, अंक ५] वार्षिक मूल्य : बीस रुपये [दिसम्बर १९९४

सम्पा० अजयकुमार आ० सम्पादक : स्वा० जगदीश्वरानन्द सरस्वती

[प्रिय पाठकगण! इस बार हम आर्यजगत् के उज्ज्वलरत्न, सर्वस्व त्यागी, सचमुच वीतराग स्वामी सर्वदानन्दजी की एक दुर्लभ कृति 'ईश्वर-भक्ति' भेंट कर रहे हैं। यह ग्रन्थरत्न हमें श्री धर्मेन्द्रजी धींग्रा, बड़ौदा के सौजन्य से प्राप्त हुआ है। आशा है पाठक इसका भरपूर लाभ उठाएँगे। पाठक इसकी भाषा पर विशेषरूप से ध्यान दें, शब्दों का संयोजन कितना मोहक और प्रिय है!]

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥

—यजुर्वेद ३०।३॥

जो-जो नर अपना हित चाहें, भक्ति-मार्ग ही वे अपनावें।

'ईश्वर-भक्ति' की चार सीढियाँ (मंज़िलें) हैं। संस्कृतभाषा में इन चार सीढ़ियों के नाम—कर्म, ज्ञान, उपासना और साक्षात्कार हैं। एक का दूसरे से बड़ा ही गहरा सम्बन्ध है। एक के सुधरने में दूसरे का सुधार और बिगड़ने में बिगाड़ है। इसी कारण से कर्म-काण्ड पर भलीभाँति आचरण करने से मनुष्य विवेकी हो जाता है और उसी के फलस्वरूप उपासना की मंज़िल में शान्ति प्राप्त होती है।

निश्चयात्मक शक्ति के दृढ़ हो जाने से ज्ञान की मंज़िल में बड़ी ही सहायता मिलती है फिर मनुष्य साक्षात्कार में विश्वास प्राप्त करके दृढ़ निश्चय द्वारा परमात्मा की ओर झुकता जाता है और अन्त में ईश्वर-भक्त की विचारधारा उस एक ओंकार की ओर बहकर एकता में लीन हो जाती है।

दुई[1] का परदा उठे दिलों से, न याद मैं हूँ न और तू हो,
यह चाहे चाहत में तेरे भगवान्! हमेशा डूबा दिले सबू[2] हो।
जिधर मैं देखूँ नज़र तू आये, तेरा ही जलवा हर एक सू[3] हो,
न हो मिजाज़ी[4] से दिल को रग़बत[5], हकीक़ी[6] में यार मूबमू[7] हो।

बस यहाँ ही मनुष्य की चेष्टाएँ समाप्त हो जाती हैं। (क्या था—अब क्या हो गया—कुछ कहने में नहीं आता—एक मामूली परस्पर भेद से प्रभु से वियोग हो जाता है) यह ईश्वर-भक्तों का इशारा है। समझ लिया इसे जिसने उसका दुनिया से किनारा है। मैं कोई योग्य लेखक नहीं हूँ, भूल-चूक को सज्जन पाठक अपनी उदारता से सुधार लें—यही निवेदन है। ओं शम्।

निवेदक

वसंत १९४० —स्वामी सर्वदानन्द

१. परायापन, २. घट, ३. ओर, ४. सांसारिक बातें, ५. लगाव, ६. प्रभु से प्रेम, ७. कण-कण।

कर्मकाण्ड

हुक्म है शरअ[1] का तू पाक-दिल[2],
हो नेक, सबसे मुहब्बत से मिल।

नेक काम मनुष्य को नेक बनाता है और बुरे कामों से मनुष्य बुरा बन जाता है। नेक काम से हृदय शुद्ध होता है और बुरे काम से अज्ञान बढ़ता है। नेक आदमी प्रभु का इच्छुक होता है और उन इच्छाओं का, जो मनुष्य को बुरे कामों की ओर खींचती हैं, दमन करता है। बुरे कामों का रास्ता पकड़ लेने से संसार में कष्ट और मुसीबतें दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं। कर्मण्यता मनुष्य को पापों से हटाकर कल्याण-मार्ग पर अग्रसर करती है। बुरे काम न करो—दु:ख पाओगे, कमज़ोर हो जाओगे। यह बात सत्य है कि कोई भी पुरुष शुरू से ही अपने-आप बुरा या भला नहीं होता। जिस स्टेशन पर मनुष्य खड़ा है उसके एक ओर बुराई और दूसरी ओर भलाई है। यदि बेसमझी से वह अपने क़दम को बुराई की ओर बढ़ाता है तो उतना ही अधिक भलाई से दूर हो जाता है। पर, यदि वह सोच-समझकर भक्ति-मार्ग को ग्रहण करता है, तो उतना ही अधिक वह सुख पाता है। यही चक्कर आगे चलता हुआ एक को तो प्रभु से जा मिलाता है और दूसरे को संसार में ही घुमाता रहता है, परन्तु आजकल दशा ही बदल गई है, जिस काम के करने से मनुष्य का हृदय पवित्र और अन्त:करण शुद्ध हो, उसे तो कोई विरला ही निभाता है। जिससे सबको आराम हो, दु:ख-सुख में परस्पर सहयोग हो, अन्याय से किसी को कष्ट न हो उस काम को कोई कोई ही करता है, परन्तु आजकल बाहरी आडम्बरों का हर कोई शौक़ीन है और इनके विरुद्ध कही गई बातों पर कान तक नहीं धरता।

जैसे कोई मत ईश्वर की पूजा बिल्कुल चुपचाप करना अच्छा मानता है और कोई घण्टा-घड़ियाल बजाकर पूजा-पाठ करना ठीक मानता है, कोई माला से ईश्वर को जपता है तो दूसरा अग्नि तापता है, एक का मुख पश्चिम को है तो दूसरे का पूर्व को, किसी ने मोक्ष को एक प्रकार से माना, तो दूसरे ने उसे उल्टा जाना है, इस विषय में कहाँ तक कहें हर एक मत ने अपने को दूसरे से पृथक् करने का कोई-न-कोई निराला ढंग निकाला हुआ है। सब किसी हद तक ठीक हो सकते हैं, परन्तु वास्तविकता से सभी दूर हैं। मनुष्य ने बाह्य आडम्बर को ही सब-कुछ मानकर असलियत को खो दिया जिससे यह संसार के झगड़ों का केन्द्र बन गया। धर्म की तो यह आज्ञा

१. धर्म का सिद्धान्त अथवा नियम। २. पवित्र हृदयवाला।

थी कि मनुष्य नेक और शुद्ध आचरण करता हो, उसके हृदय में घमण्ड और अभिमान न हो, एक-दूसरे के साथ प्रेम का बर्ताव करें, शत्रूता के बीज बोने से और फ़साद करने से सदा डरे। यह तो ठीक है कि मनुष्यों में कुछ-न-कुछ भेद होता है, उसूल तो झगड़ों को मिटाता है, इसकी अज्ञानता से मनुष्य झगड़ों को उठाता है। असलियत तो यह है—

नेकी की ताकत नहीं, तो बदी[१] से परहेज़ कर।
अपने ऊपर ज़ुल्म करने से सदा ईश्वर से डर॥

मनुष्य का यह मुख्य कर्त्तव्य है कि वह शुभ काम करनेवाला ही बने। यदि इसमें शुभ कर्मों की शक्ति न हो तो बुरे कर्मों से दूर रहना तो आवश्यक है। यही मार्ग संसार के हित और कल्याण का है। जब मनुष्य अपने स्वभाव को बुराई से हटाकर उसके प्रभाव को दिल से मिटा देता है तब उसका स्वयं नेकी करने का स्वभाव हो जाता है। चित्त की प्रवृत्ति किसी-न-किसी ओर होनी तो आवश्यक है, बुराई का द्वार बन्द होते ही भलाई का स्रोत आप ही खुल जाता है। जो मनुष्य किसी के साथ बुराई करता है, वह आज नहीं तो कल मुसीबत में फँसता है। अन्याय से किसी को दुःख में पहुँचाना अपने-आपको स्वयमेव मुसीबत में फँसाना है। परमात्मा दुःखनाशक है— अतः जो मनुष्य किसी को मुसीबत से बचाता है वह भी अपनी योग्यता के अनुसार प्रभु के इस गुण का भागी बन जाता है। फिर कभी वह कष्ट नहीं पाता। प्रभु स्वतन्त्र है, अतः जो कोई किसी को बन्धन से मुक्त करता है, वह मुक्तिपद को पाता और प्रभु के समीप हो जाता है। प्रभु दयालु है, अतः जो किसी पर दया करता है वह अमरत्व प्राप्त कर कभी नहीं मरता। **हर बात में खुश रहना, बुरी बात मुख से कभी न कहना, सुख-दुःख के आघात को शान्तिपूर्वक सहना, परमेश्वर की आज्ञा है।**

शुभ कर्मों के फलस्वरूप स्वास्थ्य, प्रसन्नता और सम्मान मिलता है, इसलिए मनुष्य बुरे कामों से बचे और भलाई के लिए आगे बढ़े। संसार के किसी प्राणी को दुःख देना किसी भी धर्मवान् का कर्त्तव्य नहीं है। मेरे भाई! तनिक इन उसूलों पर ध्यान दो कि ये मनुष्य को दुनिया के रास्ते से निकालकर प्रभु से मिलाप की ओर किस प्रकार ले-जाते हैं। जो मनुष्य किसी को अन्याय से कष्ट पहुँचाता है वह प्रभु से दूर हो जाता है। भलाई करना, बुराई से दूर रहना और परहेज़गारी[२] का जीवन बिताना परमेश्वर को प्राप्त करने का एक विशेष मार्ग है। धर्म ही एक सच्चा मार्ग है जो प्रभु तक जा पहुँचाता है—इसपर चलनेवाला कभी भटकता नहीं। वह उपाय जो प्रभु से मिलाप में सहायक हो, उसपर आचरण करने से भला कौन कष्ट पा सकता है? मनुष्य की गिरावट का मुख्य कारण दूसरों को दुःख पहुँचना ही है।

---

१. बुरे काम। २. इन्द्रिय-निग्रह, संयम।

बुराई या भलाई जो हैं करते,
सदा उसका हैं वैसा फल वे भरते।

मनुष्य बुरे या भले काम के प्रभाव से कभी बच नहीं सकता। यह नियम बड़ा दृढ़ और सूक्ष्म है। सारा संसार इसी नियम के अनुसार चल रहा है। किसी के पाँव सफलता चूम रहे हैं तो कोई अपने (व्यक्तित्व) को ही मिटा रहा है। विशारदों ने खोज की है यह नियम तो सदा से जैसा-का-तैसा रहा, रत्तीभर भी नहीं बदला। मनुष्य पहाड़ों की कन्दराओं में जाकर अपने को छिपाए, चाहे अपने को सागर की तह में जा बिठाए और चाहे आकाश में उड़ जाए—पर इस संसारभर के राज्य में कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ कर्म अपने परिणाम से पीछा छुड़ा सकें। इसीलिए विद्वान् ने कहा है कि जो मनुष्य औरों के साथ बुराई अथवा भलाई करता है, उसका परिणाम लौटकर उसी को प्रभावित करता है, जिससे सांसारिक दुःख या सुख पैदा होता है और यदि भला काम फल की इच्छा से रहित हो, जिसमें दिखावट या बनावट का लगाव न हो तो वह (भलाई) कर्त्ता को मोक्ष की ओर ले-जाता है। इसलिए धर्म की यह आज्ञा है कि बुरे कामों का त्याग ही करना चाहिए। नेक कार्य यदि फल को दृष्टि में रखकर किया जाए तो वह सांसारिक सुख देता है परन्तु यदि भलाई फल की अनिच्छा से की जावे तो उसका फल मोक्ष है। अब मनुष्य को अधिकार है कि जिधर को चाहे अपनी गति बढ़ाए—

शरअ[१] का फरमान[२] है नेकी से सारे काम कर।
मत बदी[३] कर भूल से, मत किसी को बदनाम कर॥

अब आप सुख देनेवाले शुभ गुणों पर ध्यान दें—शुद्ध मति, सच्चा ज्ञान, सहनशीलता, होशियारी, सत्यता, पवित्रता, इन्द्रिय दमन, मनोनिग्रह, सुख-दुःख की अधिकता में निर्लेपता, बुरे कामों से भय, सत्कर्मों में निडरता, दया, आराम, सन्तोष, भक्ति, दान, शुभ-कामना, नशा से परहेज़ आदि अच्छी बातें प्रभु की ओर ले-जाती हैं। जिन गुणों से सबको लाभ और संसार में शान्ति स्थापित हो वे ईश्वर की आज्ञा हैं, उनका पालन करना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है और जिन मनुष्यों में ये गुण हों वे देवता कहलाते हैं। देवता का कोई विशेष प्रकार का शरीर नहीं होता—देवता तो गुणवान् को कहते हैं।

जिन बुरे कर्मों से मनुष्य स्वयं कष्ट उठाता और औरों को कष्ट पहुँचाता है वे सब दुष्टों के प्रिय दुर्गुण हैं, जो निम्नलिखित हैं—अज्ञान, बुराई करना, कुविचार, कुकर्म, बुरी नियत, बुरे दृश्य देखना, दुष्कर्म करना, स्वार्थपरता, आत्मश्लाघा, भीरुता, सुस्ती, नुक्ताचीनी, व्यर्थ क्रोध, धर्मान्धता, घमण्ड,

---

१. नियम, धर्म, २. आज्ञा, ३. बुरे काम।

अयोग्य इच्छा, लोभ, तृष्णा, वेहूदा बोलना, अनम्रता, बुरा स्वभाव, बुरे संग में प्रीति, विद्याभ्यास में घृणा, अज्ञानता और दुष्कर्मों में प्रवृत्ति।

इन उपरलिखित दुर्गुणों से मनुष्य शैतान बन जाता है।

शैतान कोई विशेष प्रकार का देहधारी नहीं। जिसमें ये बुराइयाँ हों वही मनुष्य शैतान है।

इन दोषों में से बहुत-से एक-जैसे और एक ही अर्थ रखनेवाले जान पड़ते हैं, पर वास्तव में ऐसा नहीं है उनमें थोड़ा-थोड़ा भेद है। जैसे तृष्णा व लोभ दोनों समान दीखते हैं पर उनके अर्थ में थोड़ा भेद अवश्य है, ऐसा ही सब जगह जान लें। ये सब बुरी या भली आदतें किसी मनुष्य में एक ही समय प्रकट नहीं होतीं—समय आने पर अपने बल को बढ़ाती हैं। एक के प्रकाश में दूसरी दब जाती हैं। उनके बढ़ाव-घटाव को जाननेवाला मनुष्य सद्‌गुण को उभारकर बुरी आदतों से अपना पीछा छुड़ा लेता है। इस नियम से ही मनुष्य सुख पाता है और प्रभु के समीप होता है।

उपासना काण्ड

मनुष्य बिना अहंकार के रहे। सत्कर्म के करने से मनुष्य को जो अभिमान-सा हो जाता है उसका नाम अहंकार है। संस्कृतभाषा में इसे अहंता (अहंभाव) अथवा 'ममता' कहा है। कोई भी सत्कर्म अहंकार के साथ मिलकर अपने असली स्वरूप में नहीं रहता, परन्तु वह किया हुआ कर्म न किये के तुल्य हो जाता है। विद्वानों ने इस दोष को दूर करने के लिए बड़े सुन्दर उपदेश दिये हैं। उनका वचन है कि यदि बाएँ हाथ से कोई शुभकाम किया जाए तो उसका ज्ञान दाएँ हाथ को भी न हो। यदि मस्तिष्क किसी के साथ भला करे तो मन उससे बेखबर रहे—ये वचन मनुष्य को इस बुरी आदत (अहंकार) को छुड़ाने के लिए काफी हैं। मनुष्य से यदि कोई काम अच्छा हो जाता है, तो वह अपनी प्रशंसा सुनने के लिए हर ओर कान लगाये रखता है। यदि कोई उसकी बड़ाई न करे तो फिर वह विवश होकर लोगों के सामने अपनी प्रशंसा स्वयं ही करने लग जाता है। यह एक ऐसा कड़ा बन्धन है, ऐसी कड़ी जञ्जीर है कि मनुष्य का इससे स्वतन्त्र होना बड़ा कठिन है। अपनी प्रशंसा चाहना अपने-आपमें एक बड़ा भारी पाप है। इसके प्रभाव से रसायन भी निष्फल हो जाता है।

बीज अपने को छुपाता है तो वृक्ष पैदा होता है और जो बीज बाहर पड़ा रहता है, वह या तो पद-दलित हो जाता है या उसे पशु-पक्षी खा जाते हैं। इसको संस्कृतभाषा में निष्काम कर्म कहा गया है। प्रभु-भक्तों के मत

में इसे नाश होनेवाला लिखा है, जैसे धान के ऊपर के छिलके को अलग कर देने से फिर वह खाने के काम तो आता है, परन्तु आगे उत्पत्ति करने के योग्य नहीं रहता। सत्य कर्म के साथ प्रशंसा का लगा हुआ छिलका मनुष्य को संसार में बार-बार लाने का कारण बनता ही रहता है। इसे दूर कर देने से नाशवान का नाश हो जाता है और शेष संसार मे रह जाते हैं।

प्रभु-भक्त इस बात को जानकर कर्म करते हैं और सत्यपथ में जा लीन होते और फिर साक्षात्कार में जाकर आराम पाते हैं। इसलिए अपनी प्रशंसा आप करना भारी भूल है। लिखा है—

तारीफ़ अपनी आप मत करना कभी तू भूल कर,
ऐब अपना देख ऐबे ग़ैर पर मत कर नज़र।

जो मनुष्य इस बुरी आदतवाला है वह अँधेरे में है। उच्च-से-उच्च मनुष्य भी अपनी प्रशंसा करने से छोटा और पवित्र होने पर भी खोटा हो जाता है। यह एक प्रकार का पाप है जो मनुष्य में परदोष निकालने का स्वभाव बढ़ाता है और उसे संसार में नाकारा बनाता है। स्वार्थी पुरुष अच्छे पुरुषों के संग से घबराता है और कोई विचारशील मनुष्य उसको समीप नहीं आने देता। स्वार्थता सत्य-पथ से हटकर कुमार्ग पर चलती है और फिर दुःख को समीप लाती है। बुद्धिमान् मनुष्य वह है जो अपने दुर्गुणों पर ध्यान रक्खे और दूसरे के दुर्गुणों की पड़ताल न करे।

स्वार्थ से काम सारे दुनिया में हैं बिगड़ जाते
गुप्त कहाँ वह भेद जिसे सभा में हैं सुनाते।

स्वार्थ से सब काम बिगाड़ जाते हैं। इससे चोट खाकर फिर वे बनने में नहीं आते जैसे किसी भेद को जनसाधारण की सभा में सुनाकर यह बताना कि यह गुप्त भेद है, किसी से मत कहना। इस वचन से केवल लोगों को हँसाना और अपने को मूर्ख बनाना है। जो मनुष्य स्वार्थी हो जाता है, वह स्वयं अपने-आपको धोखा देता है और वह शुभ आचरण को बेचकर दुराचरण को मोल लेता है। इससे सुख-दुःख में समभाव जाता रहता है और पद-पद पर कष्ट आते हैं। यह स्वार्थ एक बला है जो शरारत को जगाती है और जो कभी दूर नहीं होती। स्वार्थता एक आत्मिक व्याधि है जिसके साथ असत्य बोलना भी शामिल है। स्वार्थ को पूरा करने के लिए झूठ और धोखा देना भी उसका स्वभाव हो जाता है—

हुआ दिल आलूदा[1] हिरसो[2]-हवा से
नहीं चमकता फिर वह [3]नूरे खुदा से।

प्रभु से मिलाप तो मनुष्य को प्राप्त ही है और यह सदा उसके समीप है। व्याप्य वस्तु व्यापक से भिन्न नहीं हो सकती। केन्द्र और घेरे का सम्बन्ध

---

१. लिप्त, २. लोभ-लालच, ३. प्रभु की ज्योति।

सदा से है। अनुचित सांसारिक विचार मनुष्य के चित्त को हर समय परेशान करके उसकी पवित्रता को तृष्णा से बिगाड़ देते हैं। इसलिए बुरे काम की ज़िम्मेदारी से बचने के लिए जीवन के कार्य-क्रम को सत्य तथा उचित प्रकार से बनाना आवश्यक है। मन की शुद्धता के बिना जो पुरुष प्रभु के दर्शन की चेष्टा करता है वह भूल पर है। जैसे जब तक 'र' के आगे 'व' न लिखा जाए तब तक 'ख' नहीं बन सकता बस जब तक मन शुद्ध न हो प्रभु-प्राप्ति नहीं होती। फिर अन्तःकरण प्रकाशित हो कर प्रभु के दर्शन से स्वयमेव आह्लादित हो जाता है। मन की शुद्धता के बिना प्रभु-प्राप्ति के लिए मनुष्य जिस प्रकार की चेष्टा करता है वह सब व्यर्थ जाती है, अतः उपासना की विधि से चित्त की चञ्चलता को दूर करके परमेश्वर प्राप्ति के योग्य बना ले तो ज्ञान-पथ की ओर उसका पग बढ़ सकता है, इसके बिना नहीं। इसलिए, प्रभु-भक्तों का वचन है—

दिलवर[१] तेरा तेरे आगे खड़ा है,
मगर नुक़्स[२] तेरी नज़र[३] में पड़ा है।

जिसकी खोज में लोग हैरान व परेशान हैं वह तो सामने खड़ा है, परन्तु लोग इसको इन बाहरी आँखों से देखना चाहते हैं। उनकी आँखों से जो वस्तुएँ दीखती हैं वे सब महसूस की जाती हैं, परन्तु परमात्मा अङ्गों से परे है, इसलिए वह किसी भी अङ्ग से मालूम नहीं हो सकता है। ठीक मस्तिष्क का दूसरा नाम ज्ञान है। प्रभु-भक्त अपने-अपने अनुभव से उसे देख सकते हैं, परन्तु उसको संसार के झूठे प्रेम ने बुरा बना दिया है। जब तक यह बुराई दूर न की जाए तब तक उसका दर्शन कठिन है। जैसेकि आँख से सुनने का और कान से देखने का कार्य कठिन है, इसलिए प्रभु-भक्त मन की शुद्धि के लिए ठीक यत्न करता है और वह उन्हीं पुस्तकों का पठन-पाठन करता है जिसमें यह विषय हो। उन मनुष्यों की संगति में जाना पसन्द करता है, जो उसमें दक्ष हैं। संसार का कोई भी ऐसा कार्य जो इस मार्ग में रुकावट डाले, उसे वह नहीं करता। यह वह उपाय है जिससे लोक और परलोक दोनों सुधर जाते हैं।

जब शत-सहस्त्र इच्छाओं से सब हृदय कलुषित होवे
फिर कहाँ प्रभु की ज्योति से अन्तर आलोकित होवे?

इच्छाओं का बढ़ते जाना हृदय में एकाग्रता उत्पन्न नहीं होने देता। अभिलाषा हृदय-रूपी सागर में एक लहर-सी उठाती है, फिर उससे दूसरी-तीसरी लहरें स्वयमेव बनती जाती हैं—इस अवस्था में हृदय में मैल बढ़ता जाता है। यह बार-बार जीवन और मृत्यु की आफ़त को साथ लाती

---

१. प्रियतम, २. दोष, ३. दृष्टि।

है। इससे पीछा छुड़ाना ही मनुष्य-जीवन का लक्ष्य है, परन्तु हर एक के विचार की यहाँ पहुँच नहीं। अनुचित इच्छा से हृदय की शुद्धता नहीं, दोषयुक्त स्वभाव को दूर करनेवाली पुण्य कमाई नहीं, परन्तु जो आचरण के प्रेमी हैं, जो इस गूढ़ विषय को हल करने के योग्य हैं, वे सदा कम होते हैं। हर कोई इस पथ का पथिक नहीं है। जिसके पूर्व शुभ कर्म सहायक हो वर्त्तमान का पुरुषार्थ ठीक प्रकार से हो और प्रभु की कृपा सहायता दे, वही इस मार्ग पर चल सकता है और वह निश्चय भाग्यवान् है जिसको योग्य पथ-प्रदर्शक मिले, परन्तु आजकल योगियों की, गुरुओं की और गुरु-मन्त्रों की बड़ी ही चर्चा हो रही है; इसके पीछे संसार की एक भारी संख्या अपनी सुध-बुध खो रही है। बड़ी विचित्र बात है कि जो चीज हर अवस्था में कम होनी चाहिए, जिसकी कमी ही सुन्दरता की द्योतक है, जिसकी अधिकता से प्रकृति भी डरती है। मनुष्य अपनी अधूरी चेष्टा से यदि इसी ओर प्रयत्नशील हो तो सिवा बुरे परिणाम के और क्या हो सकता है। प्रत्येक सम्प्रदायवालों ने अपने शिष्यवर्ग को बढ़ाना और उन्हें अपने सिद्धान्त का अन्ध-विश्वासी बनाना ही अपना विशेष कर्त्तव्य जान लिया है। भारतवर्ष इस बात का दीवाना है, इसलिए तो इसके लिए न कोई खड़े होने का स्थान है और न कोई ठहरने का ठिकाना। कितनी भूल है, कितना अन्धविश्वास है कि गुरु को परमेश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया जाए! इससे प्रकट है कि यह देश सत्य-मार्ग पर आरूढ़ नहीं! ऐसी अनुचित चेष्टा हृदय की शुद्धता प्रकट नहीं करती परन्तु भूल को जताती है। विद्वानों का तो कथन है—

जिन्दगी को रास्ती[१] से तू गुज़ार
कर्म फल से फिर रहेगा सुबकसार[२]।

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन को सत्यमार्ग पर ही चलकर व्यतीत करे और बनी हुई बात को अपने हाथ से न बिगाड़े। यह नियम कर्म के फल से मुक्त होने का है। मनुष्य बुरे कार्य के बोझ से हल्का हो जाता है। अन्तःकरण की प्रवृत्ति विश्व-प्रेम में झुक जाती है, फिर सत्कर्मों से मेल और दुष्कर्मों से बैर हो जाता है। सुख में उसी प्रभु का धन्यवाद और दुःख में शान्ति अनुभव करने का स्वभाव हो जाता है। फिर जीवन में न तो अधिक आनन्द और न मृत्यु से अधिक घबराहट होती है। हरएक को सुखी देखकर खुश होना और दुःख में हाथ बटाना उसका स्वभाव

---

१. सत्यता, २. बरी, मुक्त।

हो जाता है। इन नियमों के पालन करने से मनुष्य में मनुष्यता आ जाती है, यदि ऐसा न हो तो लोभ-लालच आदि के प्रभाव से हृदय घबराता है। मनुष्य को सांसारिक कारोबार में सच्चा रहना चाहिए और कभी भी मुख से झूठ या कटुवचन न कहना चाहिए। व्यवहार और व्यापार में नेकी से काम करना चाहिए और धोखा-देही से डरना चाहिए। इससे मान-मर्यादा और शुभ कमाई प्राप्त होती है।

निश्चय से और विचारशील की सङ्गति से आत्मा अमर हो जाता है। यह विचार बहुत अच्छा है जिसके अनुसार निश्चय करने से परमात्मा का मिलाप होता है। **कामवासना की अधिकता से डरना, गृहस्थ के नियमों को भली प्रकार से पालना, लोभ और इच्छाओं से पराजित न होकर इनपर विजय पाना, यह मनुष्य का बड़ा कर्तव्य है। इस कर्तव्य को पूरा करते रहना मनुष्य को बुद्धिमान् बनाता है और उसको कभी भी बेचैनी में नहीं ले-जाता है।** इस प्रकार से जीवन बिताना ठीक है। जो इसपर आचरण करता है वही पूरा मनुष्य है; जो इन नियमों का पालन नहीं करता वह चाहे किसी का गुरु हो या शिष्य, वह गँवार है। जाँच करने से यह प्रमाणित हो चुका है कि जब तक मन अनुचित इच्छाओं से बरी न हो तब तक भलाई की लता कैसे हरी हो सकती है। वह मनुष्य इस पथ में कैसे गति करेगा, जिसके नेत्रों में मनुष्य-पूजा की धूल पड़ी हो। **मनुष्य को परमेश्वर से अधिक मानना भलाई को बेचकर बुराई को मोल लेना है, जो ऐसा करते हैं वे सच्चाई से घबराते हैं और झूठ के समीप हो जाते हैं।** गुरु तो अपनी चतुरता से माल उड़ाने लगे और शिष्य-जन धोखे में आने लगे। कैसी बात है जिसका न मोल है और न पात है, केवल वहम-परस्ती है, जिससे मनुष्य-समाज पर बड़ा ही आघात है। हाँ, यह सत्य है, इस काम को वही कर सकता है जो संसार को पढ़ाने और दुनिया से कमाने की अक़्ल रखता हो। हर एक इस विद्या में प्रवीण नहीं। इस मनुष्य-पूजा से तो यह प्रकट है कि—

भूलकर हमने खुद को कैसा अन्धा आपा किया,
अपनें घर के बीच में आप ही को गुम किया।

मेरे मित्र! मनुष्य-पूजा प्रभु-पूजा के उच्च नियमों को मनुष्यों के दिलों से दूर हटाकर उनको कङ्गाल बना देती है। यह ऐसी भूल है जैसेकि जिह्वा और कान रखनेवाला खुद को गूँगा-बहरा बना दे या अपने ही घर का स्वामी गुम हो जाए। ऐसी बातों का बनाना केवल अपनी भूल पर लोगों को हँसाना है। **जो जिसके योग्य हो उसको वैसा समझना, जिसकी मनोवृत्ति संसार के उपकार में हो उसका मान करना, उसके उपकार को न भूलना, भला ही है।** मगर उसको भूल जाना चाहिए। यह जो कुछ कहा गया है उपासना की सीढी के विपरीत होने से कहा है। यह तो मनुष्य के

स्वभाव को शुभ बनाकर परमात्मा की ओर जो सर्व भलाइयों का केन्द्र हैं, ले-जाती है। इसके प्राप्त किये बिना साक्षात्कार की सीढ़ी किसी को नहीं मिलती है। उपासना की रीति बुरे रास्ते पर चलनेवाले भूले दिल को, जो इसका शत्रु और बुराई चाहनेवाला हो जाता है, बचाती है। इसके सहारे ही अगर मनुष्य में बनावट का स्वभाव न हो, दिल पर काबू हो जाता है। बस इसके जीतने से जग जीता जाता है। इस एक इशारे पर दुनिया के सब विद्वान् सहमत हैं। यही एक बात है कि जिसपर चलने से मनुष्य संसार के बन्धन से मुक्त होकर मुक्ति को प्राप्त करके सदा के लिए प्रसन्नचित्त हो जाता है। इस काम के करने को इस नियम पर कटिबद्ध होना चाहिए जिससे आगे-आगे आत्मा की शक्ति बढ़ती जाए और सांसारिक मोह के जञ्जाल से कमज़ोरी सामने न आये वह यह है—

आँख कान मुख मूँदके नाम निरञ्जन लेय,
अन्दर के पट तब खुलें जब बाहर के पट देय।

देखने योग्य वस्तु को न देखना और न देखने के योग्य को देखना, आँख को बन्द करना है। सुनने के योग्य शब्दों को न सुनना और न सुनने योग्य शब्दों को सुनना, कान को बन्द करना है। फ़िजूल बातों से जिह्वा को न रोकना और शुभ और हित की बातों का न कहना जिह्वा को बन्द करना है। इस अमल के दृढ़ हो जाने से, प्रभु-भक्त की शर्त है कि आत्म-साक्षात्कार और प्रभु-दर्शन न हो तो मुझे झूठा समझो, मेरा उपहास करो। यह अमल बार-बार परमात्मा के गुण के प्रकट होने में, उसके प्यार में, बड़ा ही सहायक है, परन्तु आजकल इसपर अमल ग़लत तरीक़े से हो रहा है। घण्टा दो घण्टा के लिए आँख, कान, मुख को बन्द करना ही शुभ काम मान लिया गया है। यह किसी सीमा तक साधन के रूप में तो ठीक हो सकता है अगर इससे ठीक रास्ता खुल जाए, मगर यह नहीं होता है। असली नियम जिसमें भूल नहीं है, वह ऊपर लिखा गया है कि आँख, कान और जिह्वा का ठीक रास्ते में जाना सिद्धि का कारण हो सकता है, इसके बिना दूसरा कोई उपाय नहीं। अङ्गों के द्वारा बाहरी धूल जो दुनियावी असर लेकर अन्तःकरण में जमा होती है वही उसके जीवन को बरबाद करने में बल पकड़ लेती है। इन इन्द्रियों और संस्कारों के दोष से दूषित होकर मनुष्य जानता हुआ न जानने और सुनता हुआ न सुनने के बराबर होता है। यह दुनिया में देखा जाता है। यह बात सही है, ग़लत नहीं है। दिखावटी अमल करनेवाले जो भीतरी शक्ति को नहीं सँभालते हैं, उनका स्वभाव ज़्यादातर कठोर देखा गया है और बाहरी आडम्बर में फँसकर कुछ अभिमान और कुछ अपने बड़प्पन की स्तुति सदा करते ही रहते हैं, इसलिए यह सारी बनावट मतलब निकालने के लिए ही प्रमाणित होती है और जो भले लोग

ठीक रास्ते पर चल रहे हैं वे किधर से आते हैं और कहाँ को जाते हैं, कुछ पता नहीं चलता। दुनिया के चाहनेवालों का इस रास्ते में कदम नहीं बढ़ता और अगर दिखावट के लिए बढ़े तो कदम-कदम पर गिरता पड़ता है, इसलिए उपासना मनुष्य की अन्दर की सफाई को ठीक करके असली जगह तक पहुँचाती और उसे परमात्मा से मिलाती है।

ज्ञानकाण्ड

ज्ञान यह कहता है कि मनुष्य को अपने-आपका नाश कर देना चाहिए। यह ऐसा शब्द है कि जिसको सुनने से मनुष्य घबरा जाता है और कुछ समझ न आने से मुरझा जाता है। फिर कुछ करते बन नहीं पड़ता। न चलने की ताकत और न रहने की जगह का दृष्टान्त सामने आता है, परन्तु ऐसा नहीं। यह प्रभु-भक्तों का केवल एक इशारा है। इसको ही गीता में कर्म-संन्यास या कर्म के नाम से कहा है। यह ऐसा अद्‌भुत तरीका है कि मनुष्य कर्म तो करता है, परन्तु उसके बन्धन में नहीं आता है। कर्म होना और कर्म करनेवाले को उसके परिणाम से मुक्त रहना यह कितना बुद्धिमत्ता का काम है। यह मनुष्य की विचारधारा के बहाव में कितनी तेज़ी है। हर एक मनुष्य इस भेद से परिचित नहीं हो सकता। अज्ञानता के अन्धकार को अपने हृदय से नहीं धो सकता है। यह प्रभु-भक्तों का एक भेद है। दुनिया का सुख उसके दिल में नहीं समाता है।

जो प्रभु-प्रेमी है संसार उसको पागल कहता है, परन्तु उसका मन हर समय एकाग्र रहता है। संसारवालों की दृष्टि में वह नष्ट हो चुका है, परन्तु वास्तव में वह सबसे सुखी है। न किसी की कुछ सुनता है और न किसी को कुछ कहता है वह सदा अपनी ही उधेड़-बुन में लगा रहता है। उसके आगे मुक्ति खड़ी हँसती है। वह कभी रोता और कभी हँसता और कभी विनय करता है। ज्ञात नहीं कि वह इस स्थिति में किसको याद करता है। जब मनुष्य अपने सच्चे उद्देश्य की ओर जाता है तो इसके बदले में फल भी पाता है। जो मनुष्य अपने व्यक्तित्व को मिटाता है वह उसके बदले में अमर हो जाता है। सबके ऐसे भाग्य कहाँ जो इस अवस्था को प्राप्त हों। हर एक के ऐसे भाग्य कहाँ जो इस मार्ग में जाएँ। अपने आपको मिटाना यह हर एक के वश की बात नहीं। इससे मनुष्य की सुध-बुध बिगड़ती, और हर एक प्रकार के विचार बिखरते हैं। जो इसके शौकीन हैं, वे ही संसार के झगड़े मिटाने में योग्य हैं। उनके न बुद्धि है और न इच्छा है कि संसार को रिझावें और अपनी सुध के लिए इसको अपने जाल में फँसाएँ। उसका मन पवित्र है। उसके सामने केवल संसार के रचनेवाले का चित्र है, उसका

मन केवल इसी में लगा है। न किसी से धोखा है और न किसी से दग़ा। वह न किसी के आगे हाथ फैलाते और न घर-घर जाकर ठोकरें खाते हैं। संसारवालों का जिस वस्तु से प्रेम है उनकी दृष्टि में वह केवल मिट्टी के समान है। संसारवाले संसार को मरकर छोड़ते हैं, परन्तु यह जीते जी इस संसार को मिथ्या जानकर अपना सम्बन्ध तोड़ देते हैं। सच है जिनके हृदय से अज्ञानता का अन्धकार दूर हो जाता है वे इस अवस्था में जाने के लिए विवश हो जाते हैं। किसी विद्वान् ने कहा है—

जो कोई बेनिशाँ के पीछे जावे।
करे गुम आपको तब उसको पावे॥

निशान के साथ बेनिशान की तलाश नहीं होती है। जिसके कर्म खोटे हैं वह संसार में किस प्रकार सुखी रहेगा? ऐसे मनुष्य से संसार को कोई लाभ नहीं जिसके विचार खोटे हैं। खोये हुए को पाने के लिए अपने-आपको खोना होता है। वही उसको प्राप्त कर सकता है, जो उसकी जुदाई में हर समय तड़पता है। न सोता है और न जागता है। इस स्थान पर पहुँचकर मनुष्य की दृष्टि में हर वस्तु एक-सी हो जाती है। हर मनुष्य एक-सा है। कोई राजा हो या रङ्क, वह ऐसी बुद्धि के प्रभाव में नहीं आता, जो एक को दूसरे से पृथक् करती हो। जब अन्धकार का पर्दा उठ जाए, तब वह सांसारिक वस्तुओं से कैसे प्रेम बढ़ाए? वह इस शरीर को नाशवान् समझता है और इसके अधिक देर तक संसार में रहने से दुःख मानता है। जैसे—

है रुकावट तू ही उसके दरमियाँ।
वरना वह जाहिर यहाँ और है वहाँ॥

ठीक है, जब प्रेमी समीप होता है, तब फिर उसकी जुदाई बहुत ही दुःखदाई हो जाती है। उस समय जो वस्तु रास्ते में हो, वह रुकावट डालती है। इससे बड़ी ही व्याकुलता बढ़ जाती है। जबतक वह रुकावट दूर न हो जाए, प्रेमी मुख से पर्दा न उठा दे, मन में शान्ति नहीं आती।

यह नियम साधारण बातों में कार्य करता हुआ दिखाई देता है। विद्यार्थी पाठशाला और कॉलेजों में विद्या पढ़ते हैं। परीक्षा का समय जितना समीप आता जाता है, उतना ही उनके मन का लगाव उधर बढ़ता जाता है। वह हर एक कार्य से पृथक् होकर केवल उसी की रचना में मगन रहते हैं। किसी उत्सव या प्रदर्शनी में जो तीन-चार मील की दूरी पर हो रही है, लोग देखने के लिए जाते हैं। जितना उसके समीप होते जाते हैं, उतना ही उनकी चाल तेज होती जाती है और जब वह दृश्य सामने आ जाता है तो उस थोड़े-से मार्ग को दौड़कर समाप्त करते हैं। बस जितना किसी के साथ प्रेम होगा, उतना ही यह नियम उसपर लागू होगा।

प्रभु-भक्त ने अपने स्वभाव को सांसारिक प्रेम से हटा लिया, और

इस संसार को नाशवान् जानकर इससे न्यारा हो गया। मन की शुद्धि ने उसको मार्ग दिखाया, घर-घर में भटकना छोड़कर केवल एक सच्चे प्रभु से भिक्षा की याचना की। पूर्व संचित कर्मों ने भला किया, एकान्त ने खुशी को जगा दिया। महात्माओं के सत्सङ्ग और अच्छी सङ्गति ने ज्ञान के प्रकाश को जगा दिया। कहाँ तक कहें, सब झगड़ों को मिटा दिया। प्रारब्ध से मिला हुआ यह मनुष्य-चोला केवल परदे का काम कर रहा है और उधर प्रभु-भक्त उस परमपिता परमात्मा की जुदाई में जीते जी मरा जा रहा है, इसलिए वह मृत्यु से नहीं घबराता। वह उसको उपकारी जानकर भय नहीं खाता। उसको मृत्यु से प्रेम है। इस शरीर के जाने में प्रेमी का साक्षात्कार है। प्रभु-भक्त मृत्यु का सत्कार करता है। इसका स्वागत करने के लिए चाव से आगे बढ़ता है कि आकर इस चोले के परदे को हटा दे और मुझे स्वतन्त्र कर दे। सांसारिक मनुष्यों के पास तेरा जाना उनके लिए अन्याय है और मेरे पास तेरा आना तेरी कृपा है। ओ प्रसन्न करनेवाली! आ, मरे पास आ! इसलिए सच कहा है—

परमात्मा हर स्थान के अन्दर-बाहर यहाँ-वहाँ हर स्थान पर हर रंग में प्रकाशमान् है, परन्तु यह शरीर राह में रुकावट है। यही कारण है कि संन्यासी मृत्यु से घबराता नहीं। मनुजी महाराज ने ऐसा कहा है कि संन्यासी मृत्यु की इस प्रकार प्रतीक्षा करे कि जैसे कोई मज़दूर (बेगारी) अपने सिर से बोझ को (अपने स्थान पर जाकर) लापरवाही से फेंक देता है और फिर बोझ-भार से सदा के लिए मुक्त हो जाता है। यह सचाई है—

नज़दीक से नज़दीक है और दूर से है दूरतर,
चश्मे दिल को खोलकर देखो वह आता है नज़र।

परमात्मा, सबका अन्तरात्मा समीप-से-समीप और दूर-से-दूर है। यह कैसी बात है जो समझ में नहीं आती। यहाँ तो बुद्धिमानों की बुद्धि भी मात खाती और आगे जाने से घबराती है। ऐसी बस्तु के लिए जिसमें हठ पाया जाए प्रयत्न करना निष्फल है, क्योंकि यह विचार-ही-विचार है। क्या कभी किसी का इससे मिलाप भी होता है? इस प्रश्न को सुलझाना कठिन है। ऐसा नहीं कि बाहरी कानों से सुना और बाहरी आँखों से वह देखा जाता है, परन्तु मन के चक्षु से देखा जाता है, इसलिए वह बाहरी आँखों से दूर और अन्दर की आँखों के समीप हो जाता है और देखने में नहीं आता है। यह कहा गया है कि परमेश्वर में जगह या समय का भेद नहीं है। कारण यह है क़ि व्यापक वस्तु समय या स्थान की क़ैद में नहीं आ सकती है और व्याप्य वस्तु व्यापक से कभी भी जुदा नहीं हो सकती। ऐसी अवस्था में फिर वह नज़र क्यों नहीं आता! इसका कारण विचार-भेद है। समय और स्थान का प्रभाव सांसारिक वस्तुओं पर तो हो सकता है, परन्तु उस अविनाशी

परम-पिता परमात्मा पर इन जीजों का अधिकार नहीं है। वह हर समय और हर स्थान पर मौजूद है, परन्तु भेद तो विचारों का है। जब तक विचार पवित्र और उच्च न हों तब तक प्रभु से मिलाप असम्भव है, अतः यह मनुष्य की योग्यता पर निर्भर है कि वह विचारों को उच्च बनाए।

लोगों को परमात्मा के जानने में इस बात की बड़ी रुकावट है कि वह पहले अपने-आपको नहीं पहचानते हैं। जिस मनुष्य को अपने-आपकी होश नहीं, वह परमात्मा को कब पा सकता है। जो स्वयं मार्ग भूला हुआ है वह दूसरों को कब मार्ग दिखा सकता है। कुछ ऐसी भूल हुई पड़ी है, आत्मा पास है, परन्तु हम उसको दूर समझ रहे हैं। मनुष्य इस शरीर के चोले में प्रकाश से अपरिचित हो शरीर के किसी भाग को अपना आपा मान ले। जब ड्राइवर को अपनी ही होश न हो, तो वह गाड़ी को भली प्रकार नहीं चला सकता। यह सत्य है कि जिसको अपना ही ज्ञान न हो वह परमात्मा को कैसे पहचान सकता है, आत्मा के ज्ञान के बाद परमेश्वर के जानने के लिए और कोई यत्न नहीं करना पड़ता— यह सिद्धान्त ठीक है। जो ज्ञान इसके दोष को दूर कर देता है, वह तत्काल ही परमात्मा के प्रकाश से इस को भरपूर कर देता है। जो ज्ञान अपने स्वरूप में बैठा हुआ है ठीक प्रकार से पहले उसको दूर करने का यत्न करना चाहिए। यह प्रभु-भक्तों का कहना ठीक है।

जो नाम से पहिले नष्ट हुआ,
वह 'शेष' में मिलकर शेष हुआ।

यह कैसा वार्त्तालाप है। आनन्द का सच्चा चित्र है। कहने और सुनने में प्रेम का प्रकाश हो जाता है। अपने व्यक्तित्व का, जिसका कभी पतन नहीं होता विकास होता है। कैसा आश्चर्य है, जिसके जान लेने से संसार की हर एक चाल मात है—यह कैसा ऊँचा स्थान है, जिसका न कोई मकान और न कोई निशान है। यह एक ऐसी आनन्दमय अवस्था है जहाँ न कोई दुःख और न कोई गिरावट है। संसारवाले ऐसी बातें सुनकर ही सांसारिक व्यवहार करते हैं, परन्तु इसपर आचरण करते डरते हैं। आजकल ऐसी बातों का बड़ा ही मान है। उसकी दुकान खूब चल रही है जो चालाक है, परन्तु वह चालाकी व्यर्थ है जिसमें अन्त को दुःख है।

इसलिए हे मित्र! यह अवसर बड़ा अच्छा है। ज़रा सावधान होकर खड़ा हो जा, बल और सच्चाई से, पूरे प्रयत्न से। प्रतिबिम्ब के पीछे मत घूम, परन्तु असली वस्तु को ढूँढ़ और फिर झूम-झूमकर मचा दे धूम, इसलिए यह कहना सच है कि फूल बन काँटा न बन, मित्र बन शत्रु न बन। जिसने मृत्यु से पहले अपने को नष्ट कर दिया है उसको फिर कहीं भी कष्ट, दुःख अथवा शोक नहीं होता, वह नाशवान् को नष्ट करके 'शेष'

में जाकर 'शेष' हो गया है।

कर्म और फल के चक्र को तभी रोका जा सकता है जब मनुष्य कर्म तो करे, परन्तु अपने आपको मध्य से हटा दे और अपने सत्कर्म और दूसरों के कुकर्म भूल जाए। यह कार्य कहने में तो सुगम पर आचरण करने में अति कठिन है, परन्तु इसके लिए भी एक उपाय है, यदि मनुष्य को लगन है तो आज नहीं तो कल प्राप्ति होगी ही, कारण यह है कि वह केवल भ्रम से निर्लज्ज हो रहा है भ्रम के दूर होते ही सदा के लिए उससे निर्लज्जता दूर हो जाती है, इसलिए भ्रम का होना न होने के बराबर है—

प्रभु सबमें सभी कुछ है प्रभु में।

मनुष्य में दोष है जो मिलाप नहीं होने देता। परमात्मा के प्रेम से, सत्सङ्ग से, उदारता से जब दोष दूर कर दिया जाता है, तब वियोग स्वयमेव दूर हो जाता है और हृदय की पवित्रता सम्मुख आती है। हृदय आनन्द में डूबकर साक्षात्कार की मंज़िल की ओर जाने को प्रेरित करता है—फिर तबियत पीछे की ओर नहीं हटती। यह अवस्था सबको प्राप्त नहीं होती। जब जन्म-जन्मान्तर का क्रम समाप्त हो जाए, तब अन्तिम जीवन में मनुष्य को ध्यान आता है। फिर—

हो गया आनन्द, दुनिया को रिझाकर क्या करूँ।
दिल प्रकाशित हो तो दीपकराग गाकर क्या करूँ।
जल गया अज्ञान का वह जाल अग्नि-ज्ञान से।
खुद बुझी जाती है अब उसको बुझाकर क्या करूँ॥

यह सब निश्चित ज्ञान से कहा गया है। साक्षात्कार में और ही गुल खिलता है—आगे देखिए।

साक्षात्कार काण्ड

ध्यान उसका दिल में समाता नहीं।
सागर है, गागर में आता नहीं॥

परमात्मा के गुण निराले हैं, गुण-गान करना सम्भव नहीं। वाक्-शक्ति इसकी व्याख्या करने में असफल रही है, परन्तु ज्ञान और बुद्धि इतना बताते हैं कि कोई जगह ऐसी नहीं जो उससे खाली है। कोई उसका इक़रार और कोई इनकार करता है फिर भी इक़रार और इनकार करने में हरेक उसमें विश्वास रखता है। हर प्राणी किसी-न-किसी हालत में उसके आगे प्रार्थी है।

कहीं भी जाओ, पर वह मिलता नहीं, परन्तु विद्वानों की सभा में उसकी कहीं-कहीं चर्चा सुनते हैं। हरएक उसको चाहता है। गरीब हो या अमीर,

महाराजा हो या फ़कीर हर कोई उसका अभिलाषी है, और कोई अद्वितीय मनुष्य केवल तुझसे संयोग करने की इच्छा से घर-बार छोड़ जाता है, और कोई जंगल में जाकर समाधि लगाता है, परन्तु फिर भी तेरा जलवा (प्रकाश) नहीं दीखता।

ओ कृपालु! हर मकान में होता हुआ भी तू बेघर (जिसका अपना कोई घर नहीं) है। हर एक वस्तु में अदृष्ट रूप में रहता है। कुल संसार तुझसे बेखबर परन्तु तू सबसे खबरदार है। इधर-उधर, ऊपर-नीचे वर्त्तमान है पर फिर भी तू ग़ैर-हाज़िर है—यह कैसा आश्चर्य है जिसे समझना कठिन है। कोई रोता है, कोई टकटकी लगाये चुपचाप अपनी सुध खोता है—केवल इसी भेद को समझने के लिए। हे मित्र! मैं पूछता हूँ—कुछ तो बता दे तू समीप है या दूर, *नार है या नूर, तू शोक है या प्रसन्नता। तू किसी को अपने बिछोह में सता रहा है और किसी को प्रेम से थपकियाँ देकर सुला रहा है। किसी पर दुःख ढाना और किसी को कृपा-पात्र बनाना स्पष्ट प्रमाणित कर रहा है कि यह न्याय नहीं, अन्याय है, शासन नहीं क्षमादान है। बस, इस लाचार का रोना-धोना तेरे आगे इतना ही काफ़ी है। व्यर्थ में किसी की परेशानी बढ़ाना ठीक नहीं, जरा परदा उठा दे और अपना जलवा (प्रकाश) दिखा दे। तेरा कुछ बिगड़ेगा नहीं, बेचारे प्रसन्नचित्त और मालामाल हो जाएँगे। इस अवस्था में सनसनी-सी छाई और धीमी-सी आवाज़ आई—

अपनी ज़िद को तू नहीं जब छोड़ता।
उलफ़ते दुनिया से मुँह नहीं मोड़ता॥
अपनी दानाई[१] से मैं हूँ बाकमाल।
अपनी बेसमझी से तू है बाजवाल[२]॥

यह विद्वानों का वचन फिलासफी की बात है कि विवेक-बुद्धि उस ओर झुक जाती है और विवेक-बुद्धिवाली प्रकृति इस रास्ते में रुक जाती है, इसलिए मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपनी प्रकृति को ठीक बनाने की कोशिश करे। यह एक ऐसा नेक कार्य है कि संसार का हरेक काम जो नेकी के आधार पर हो, वह सुन्दर व आनन्ददायक हो जाता है और प्रभु-मिलाप सुगम हो जाता है—

नहीं कहता हूँ दुनिया से जुदा हो,
पर हर काम में यादे-खुदा हो।

संसार से वैराग्य उस प्रभु की पहचान का ठीक रास्ता नहीं है। जो यह कहते हैं कि उसके मिलाप के लिए दुनिया छोड़ दो, वे असली भेद नहीं जानते। हाँ यह ठीक है यदि किसी को एकान्त से प्रेम है अथवा किसी

---

* अन्धकार है या प्रकाश। १. बुद्धिमत्ता, २. पतित।

को कम बोलना पसन्द है तो बहुत न बोले—यह अच्छा गुण है। मनुष्य की सोचने और समझने की ताकत को बढ़ाना है—यदि शौक़ हो।

बाह्य संसार का यह शरीर एक छोटा-सा नक़्शा है। कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो संसार के बनाने में काम आई हो और वह इस शरीर में मौजूद न हो। इसलिए यह कहना ठीक है कि जब तक यह जिस्म साथ दे रहा है दुनिया को छोड़ना कठिन है। देखा जाता है कि जो आजकल जमाने में बैरागी माने जाते हैं, वे दुनियादारों से अच्छा खाते और आराम पाते हैं और उन लोगों को जो कई कठिनाइयों में फँसे हुए भी अपना गुज़ारा करते हैं—उन्हीं को डराकर अपनी पूजा कराते हैं। कैसी विचित्र अवस्था है—यह उस तरीके का एक बहाना है—केवल भारतवर्ष ही इस बात का दीवाना है, इसलिए देख लो इसका बिगड़ा हुआ जमाना है।

बेकायदा दुनिया नहीं छोड़ी जा सकती। पैसा तो पास नहीं पर उसकी इच्छा बनी रहती है। वे धन को क्या छोड़ेंगे जिनसे धन की व्यर्थ इच्छा नहीं छूटती। इसी तरह हर एक को समझ लेना चाहिए। ऐसी बेढंगी चाल से कौन नियत स्थान तक पहुँच सका है। इस प्रकार की ग़लत कोशिश करने से कोई नेक नतीजा निकल सकता है? कदापि नहीं। अधूरे उपदेशों से, प्रभाव-रहित शिक्षाओं से, उपाय-हीन चेष्टा से, स्वार्थता के बहकाने से, व्यर्थ झगड़े उठ जाने से स्पष्ट हो रहा है कि भारतर्वष आज से नहीं, परन्तु बहुत समय से बिगड़ता ही चला आता है। यह बात सत्य है, कोई किस्सा-कहानी नहीं, जमाना गवाही दे रहा है—कोई बहाना नहीं। कोई भी काम छोटा हो या बड़ा, गुप्त हो या स्पष्ट—तब तक सुचारु रूप में न आएगा, जब तक नेक हाथों में न जाएगा, दुनियावाले बे माल और उसे जोड़नेवाला माला-माल। हाँ, उनमें नेक मनुष्य भी मौजूद है, सबको एक-सा बताना तो पाप-मार्ग में जाना है। कुछ समझदार तो संसार का रुख देखकर उदासीन, चुपचाप बैठे हैं और जो कुछ काम उनकी सहायता से हो रहा है, वे बहुत कम संख्या में हैं। यूँ तो एक मनुष्य भी काफ़ी होता है जो शुद्ध आचरणवाला, झूठ और धोखा-देही से दूर, लोक-सेवा में तत्पर, विद्या-युक्त और कर्तव्य में निपुण हो। ऐसा मनुष्य, यदि प्रभु की कृपा हो, तो आये जिसके सत्य उपदेशों से अज्ञान-रूपी अन्धकार दूर हो जाए। इसीलिए किसी विद्वान् ने ठीक कहा है कि दुनिया से अलहदा होने को मैं तुम्हें नहीं कहता। हाँ, उस काम को कर, फिर किसी से न डर। उस अविनाशी, सर्वगुण-सम्पन्न, प्रकाशवान् सबसे नजदीक और सबसे दूर, निराकार, सर्वशक्तिमान्, सृष्टि के शासक, जिसके बराबर या बढ़कर और कोई नहीं, यह सब उसके साधारण गुण हैं, वह सर्व-व्यापक और निर्लेप, स्वयं कभी दृष्टिगोचर नहीं होता पर सबको देखने में समर्थ है। उसे भूलकर अपना जीवन मत बिता। स्वयं उसपर आचरण कर और दूसरों से करा। जिसे उसकी याद है, वह सदा प्रसन्नचित्त

है। जो उससे दूर है, वह सदा लाचार व मजबूर है। जिसके लगाव में पड़कर मनुष्य उसे भूल जाता है विद्वानों ने उसे दुनिया कहा है और वह पक्का दुनियादार है और दुनिया में रहता हुआ भी (जैसे कमल का पत्ता जल में रहता हुआ उसके प्रभाव से खाली रहता है) उसको नहीं भूलता है, ध्यानपूर्वक वैरागी है। यह सच है संसार बेगाना है, ध्यानपूर्वक देख लो, झूठ नहीं, सत्य है, समय निकल जाता और फिर मनुष्य पछताता है पर हाथ कुछ नहीं आता है। इसलिए किसी ने ठीक कहा है—'हथ कार वल, दिल यार वल'—इसका मतलब यह है कि हर एक काम को नेकी से निभाना और हर समय बुरे कामों से हटना है, पर भारतवर्ष उससे उल्टा चला। ईश्वर का नाम जपता रहा और एक-दूसरे को ठगता रहा। जिसका परिणाम भी ठीक वैसा ही निकला है।

मनुष्य का दुष्कर्मों की ओर तभी झुकाव होता है जब वह अन्धकार में जाता है। प्रकाश में मनुष्य पाप से परहेज़ करता है। वह सर्व-शक्तिमान् विश्वास और सत्य से भरपूर प्रकाश है। उसकी याद में मनुष्य 'सत्य-मार्ग' को कभी नहीं छोड़ सकता। इसपर आचरण करने से पाप का विचार तक नहीं आता। हृदय में विश्वास हो जाता है, अत: नेक कार्य करने का स्वभाव हो जाता है। इसी भूल से मनुष्य को मौत सताती और उसको जीवन के वास्तविक उद्देश्य से हटाती है, इसलिए उससे दिल लगाओ और उसे कभी मत भुलाओ।

यदि दिल से कभी उसको न भूले,
फूलों की तरह फिर तू भी फूले।
जिसे देखता हूँ मैं आँखें पसार,
दिलाती तेरी याद है *किरदगार॥

क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता है, मगर बिना कहे रहा भी नहीं जाता है। ज़ुबान में इतनी शक्ति नहीं जो उसका वर्णन कर सके। कोई बुद्धिमान् हो तो इस समस्या को हल करे। आँखों में इतनी दृष्टि नहीं जो उसका दर्शन करें। मन में इतनी शुद्धता नहीं जो बार-बार ध्यान करे। न सन्तोष व शान्ति है, पर हर समय उसी की चर्चा है। कोई कुछ बताता है, दूसरा कुछ सुनता है—फिर किसपर विश्वास करें। यदि ध्यान से देखा जाए तो न कोई बेगाना है न अपना, न कोई कम न अधिक। यह एक भेद है जो कहने में आसान है पर इसपर आचरण करने के लिए हर एक परेशान है। इस अवस्था पर पहुँचते ही अचेतन अवस्था है। एक विशेष प्रकार की खामोशी हो जाती है। मेरे मित्र! यही तो एक §अदा है जो होती अदाθ नहीं। दृढ़ निश्चयवान् मनुष्य सूली पर चढ़ता है पर मुँह पर उफ़ (आह) तक नहीं लाता। ऐ संसार!

---

* ईश्वर। § भाव-भङ्गिमा। θ चुकाना [यही तो एक हावभाव है जो पूरा नहीं होता]।

उधर मत जा, रोएगा। इधर लौट आ, आराम पाएगा। इस रास्ते में आम लोग नहीं जाते हैं। जो जाते हैं फिर लौटकर कहाँ आते हैं? यहाँ चालाकी का काम नहीं, होशियारी का नाम नहीं। यहाँ कहाँ होशियारी, यहाँ तो मिट्टी ही मिलती है और मिलती है खाकसारीδ। यह सब होते हुए भी उसकी अदा लगती है प्यारी-प्यारी। इस अवस्था में एक आवाज़ आई—होश में आ, मत घबरा! आगे बढ़, हरगिज़ न डर! इस उधेड़बुन में कुछ हिम्मत बँधी। वह गुप्त भेद जरा समझ में आया, खुशी से राग गाने लगा, रोतों को हँसाने लगा। कभी गाता है—कहाँ जाऊँ? कहाँ जाऊँ? कहाँ जाऊँ मैं? भटक-भटककर हार रहा—अब दिल में दर्शन पाऊँ मैं और कभी सुनाता है—मैं तेरा हूँ, तू मुझे दिल से न भूल। इस तान को तोड़कर, प्रेम से हाथ जोड़कर कहने लगा कि अब उसके आगे न किसी प्रकार का झगड़ा ही है और न कोई बखेड़ा ही है। यह ठीक है कि लाजवाबλ बात का जवाब नहीं, पर हाज़िरजवाबχ होते हैं लाजवाब कहीं।

ओ भगवान्! इस बात को तो बता दे कि तूने निराकार होकर इस साकार संसार को कैसे बना दिया? लामकानφ होकर इस आश्चर्यकारी मकान को बनाकर अद्भुत प्रकार से कैसे सजा दिया? हम तो समझे बैठे थे कि इस बगीचे में न कोई बाग़वान है, न माली है। जब ध्यान से देखा तो पता लगा कि माली भी है और उसके कर्त्तव्य भी हैं। उस निराकार का पाता वही है जो अपने को मिटाकर बे निशान बनाता है और उस लामकानφ को पाने के लिए अपना मकान छोड़ता है। उसकी याद को स्वयं बहलाता है।

इस प्रकार की बातें बना-सुनाकर बड़े खुश हुए थे कि गुप्त भेद प्रकट हो गया, पर प्रकट होते ही फिर बयान से परे हो गया। नग्न है पर फिर भी परदानशीन कहलाता है। सामने खड़ा है पर दीखता नहीं। किसी तरह यह परदा राह से दूर हो। किसे पूछें? कौन बताएगा? भेद किस तरह हाथ आएगा? क्या आज तक किसी ने जाना ही नहीं अथवा उसके जाननेवाले होंगे कहीं? सुना जाता है जो सुषुप्त अवस्था से चेतना में आता है वह जान-बूझकर अचेतन हो जाता है। यदि कोई उससे इस बात का ज़िक्र करे तो वह चुप हो जाता है। अजब मुश्किल में जान आई, इस झंझट से कैसे छूटें? स्वयं अपनी मुशीबत को बुलाया। पीछे को भूल गये आगे का रास्ता हाथ न आया। इस अवस्था में कौन पथ-प्रदर्शक होगा जो रास्ता बताए और अपनी कृपा से इस उलझन से हमें छुड़ाए? दर्दे-दिल से आँखें आसुओं से भीग रही थीं—कोई नहीं जानता कि किसकी तलाश में यह दु:ख उठा रहा है। जिधर देखता है, उसी ओर देखता रह जाता है। कोई कुछ कहे, वह हाँ या ना नहीं करता। जो लोग उसके पास आते हैं भौंचक्के-से रह जाते हैं। कोई चुप

δ विनम्रता। λ जिसका कोई उत्तर न हो। χ प्रत्युत्पन्नमति। φ बिना घरवाला।

और कोई वहाँ ही सो जाते हैं। कोई धीमें कहता है कि इसको किस दुःख ने सता दिया। किसी ने कहा किसी की याद में उसने दुःख को भुला दिया। सूरत भोली-भाली है। हृदय हर प्रकार की लाग-लगावट से खाली है। चाहे वह बैठा लोगों के बीच है पर उसे यह पता नहीं वह कौन है और कहाँ है? किसी ने कहा—देखो! इसकी हर अदा निराली है, दूसरे ने कहा किसी ने इसपर जादू का प्रभाव डाला है। इसी बीच में एक प्रज्ञावान् संन्यासी प्रकट होकर उधर आ निकला और उसकी उस अवस्था को देखकर कहने लगा—

मेरी बात सुन तू उठाकर नज़र,
भटकता क्यूँ फिरता इधर से उधर,
तेरे पास हरदम रहे तेरा प्यारा,
कभी भी वह तुझसे नहीं होता न्यारा॥

संन्यासी की बातों में सत्य (सत्य का प्रभाव) था, दर्दे-दिल के लिए रामवाण औषध थी। बेचैनी दूर हुई, प्रभु के साथ एकता का भाव प्रकट हुआ। विश्वास ने उसे सहारा दिया, सब लोग चलते बने और स्वतन्त्र व प्रसन्नचित्त संन्यासी यह कहता हुआ लोप हो गया—

सिफ़त[१] तेरी क्या करे कोई, नहीं ताकते बयान[२]।
बेनिशाँ[३] बेमिस्ल[४] कहने पर भी तू है बेगुमान॥

शोक! ऐसी बातें कौन सुनाता है। न समझ ही काम करती है, न भेद ही हाथ आता है। जिसने समझा वह तो बता ही नहीं सकता। जिसने जाना, वह समझा ही नहीं सकता। इससे तो यही प्रकट होता है कि जो उसको नहीं जानते, वही तो समझाते हैं और जो उसे जानते हैं, वे चुप रहते हैं।

मेरे मित्र! यह कैसा गोरख धन्धा है, कैसा अजब फन्दा है, जिसका समझना कठिन जान पड़ता है, प्रयत्न करके थक गये। अब तबियत घबराती है, व्याकुलता सताती है, पद-पद पर बेचैनी होती है। राग तो बहुत गाया, पर सब वेसुर और बेताल। चेष्टा व्यर्थ हुई और अन्त में मुँह की खाई। अब कहाँ जाएँ। जान अजब मुश्किल में आई। खबरदार हो तो खबर दे कि इस कठिनता से कैसे छुटकारा होगा। सच है, बिना पथ-प्रदर्शक के इस मार्ग पर चलना कठिन है। जो ज़िद से आगे बढ़ते हैं इस रास्ते में उनकी मिट्टी ख़राब होती है। इसलिए पथ-प्रदर्शक तो आवश्यक है पर वह बुद्धिमान् और दूरदर्शी हो, सांसारिक इच्छाओं से परे हो, संसार-हित ही उसका जीवन और मृत्यु हो। वाह! वाह! इस बात को सुनकर कुछ तो सन्तोष हुआ और निश्चय हुआ कि ज्ञानहीनों की बातें सुनने से कुछ लाभ नहीं। उच्च उच्चारणवाले विद्वानों के भाषण में प्रभाव-शक्ति होती है जो संसार के विषैले

---

१. गुण-गान। २. बताने की शक्ति। ३. निराकार। ४. अद्वितीय।

भावों को दूर करने में समर्थ हैं और वह अन्धकार के हटाने में सफल होती है बस उनके पास जाना जिनका न कोई अपना है न बेगाना, जिनका हृदय लाग लगाव से परे है। जो न कभी किसी से डरते हैं और न सत्य कहने में बहाना ही करते हैं।

यह सब ठीक है, पर ऐसे शुद्ध आचरणवालों का मिलना कठिन है। मेरे मित्र! उनकी खोज कर जिनके अन्तःकरण में पूरी लगन है। डाँवाडोल चित्तवालों को कहाँ इसका ख्याल है। हिम्मत न हारो, आगे बढ़ो, मञ्ज़िल कड़ी है, प्रेम की बाधा दुनियादारों के रास्ते में खड़ी है। जिस तरह मैदान से दिलावर का कदम कभी पीछे नहीं हटता उसी तरह प्रभु-इच्छुक जिज्ञासु अपने निश्चय पर दृढ़ रहकर कभी दुनियावी प्रेम में नहीं फँसते—कदापि नहीं।

ऐसी अवस्था में पास ही एक कर्त्तव्य-क्षेत्र था मानो कि वह पथ-प्रदर्शक के स्थान पर आगे ही खड़ा था।

वह मस्तानी आवाज़ में कहने लगा—

सुनो बात मेरी खबरदार होकर,
किसी को नहीं मिलता हँसके न रोकर।
तेरे पास हरदम रहे तेरा प्यारा,
हरगिज़ नहीं होता तुझसे वह न्यारा।
मुहब्बत हो—दिल तेरा है उसका घर।
न धन बल वा दुःखों से आवे नज़र॥

हे मित्र! प्रभु से मिलाप न निकट और न दूर है। तनिक प्रेम तो जाग्रत् करो, दिल से नफ़रत को दूर कर दो, मोह और द्वेष को परे करो और शुद्ध हृदय से सबसे मिलो। लोकसेवा में समय बिता और प्रभु के आदेश से कदापि दूर मत हो। एक ही प्रभु के सब प्राणी हैं। इस बात को जानते हुए कभी घमण्ड न करो, धोखा व कपट छोड़कर क्रोध से अपना नाता तोड़ लो। इमानदारी से धन कमा, नेकनीयती से उसे खा और सत्य-मार्ग पै लगा। अच्छी सङ्गत में रहो, बुरी सङ्गत में अपने को बुरा न करो। ऐशो-आराम में वक्त न गँवा। मृत्यु अवश्यम्भावी है, उससे मत डर। यह प्रभु का आदेश है, इसे हृदय से स्मरण करो। प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव बनाओ। अपने सत्कार्यों व धर्मनीति से औरों को प्रसन्न करो। जहाँ तक बने उस प्रभु का यश गा उसे धन्यवाद देना चाहिए। संसार की हर वस्तु नाशवान् है पर उसका नाम अन्त तक रहता है। संसार भी नाशवान् है पर उसमें एक गुण अद्‌भुत है। वह यह कि मनुष्य यदि विचारशील हो तो मृत्यु पर विजय पाता है, फिर न जीता है न मरता है, अर्थात् अमर हो जाता है। बिन्दु का नदी में गिरना नाश और फिर नदी में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होना जीवन है। यह उधर को जाता है और वह इधर से आता है, एक मध्य में दोनों उपस्थित हैं, परन्तु इस भेद को वही जानते हैं जो बुद्धिमान् और योग्य हैं। इस सीढ़ी

पर चलने के लिए अन्तःकरण की शुद्धि की आवश्यकता है। वही आगे बढ़ता है जो बाहर की चमक-दमक से दूर रहता है।

प्रातःकाल उठकर उस प्रभु को याद करो। इस शुभ कर्म से सदैव चित्त प्रसन्न होकर दिल से दुई का परदा उठता है। प्रभु के समीप होने से ही उसके दर्शन होंगे और फिर सबसे प्रेम-भाव होगा। उस दशा में न कोई अपना है न बेगाना। यह एक गूढ़ रहस्य है।

इससे आगे बल नहीं है और न ही कोई उपाय है। जो इस भेद को समझे उसी का इन सांसारिक झगड़ों से छुटकारा होता है।

मान लिया कि ईश्वर-भक्ति की महिमा कहने सुनने से बाहिर है। तब भी कुछ बखान होना ही चाहिए। इससे प्रसन्नता होती है, यह सब जानते ही हैं।

प्रभु एक है, इसके समान कोई नहीं है। मनुष्य को नाशवान् कहते हैं और मनुष्य आकारवाला भी है, परन्तु वह निराकार, अजर-अमर और अनादिकाल से है। उसने मनुष्य को बनाया, मनुष्यत्व दिया, सत्य मार्ग समझाया और कहा—हठ किसी से न करना, मत परस्पर लड़ना, सदैव बुरे काम से डरना।

कई बार लोग कहते हैं—क्या अजीब बात है, मनुष्य तो जिसे देखा सुना जाता है, कारोबार में रोज आता है वह तो नाशवान है और जिसको न कभी देखा और न सुना वह सदैव एकरस अमर है। वह बाहर से किसी प्रकार भी नहीं जाना जाता और नहीं पहचाना जाता है। कोई इसके बराबर हो तो समझा जाए। यदि इसमें रूप आदि गुण हों तो ध्यान में लाया जाए। वह इन सब बातों से अलग है यही तो इसमें विशेष गुण हैं। वह हार और जीत से अलग है। आधार के प्रमाणित हो जाने से ऊपर और मध्य दोनों प्रमाणित हो जाते हैं, इसलिए ईश्वर तो सर्व-सृष्टि का आधार शक्तिमान् और अमर है। सारी सृष्टि का प्रबन्ध करना, नाशवान् को नष्ट और प्राचीन को स्थापित रखना उसके ही नियम अनुकूल है। वह सदैव जाग्रदवस्था में सावधान, एकरस रहता है। संसार के मनुष्य उसकी ही पूजा करते हैं, उसको सर्वव्यापक जानकर बुरे कर्मों का ध्यान और उनके करने से डरते हैं। विद्वान् लोगों ने उसको ही अपना प्यारा और सहारा माना है। उसकी उपासना करना ही मोक्ष को पाना है। योग्य मनुष्यों ने जीवन और मृत्यु से स्वतन्त्र हो जाने का उपाय उसकी याद को ही बताया है और स्वयं उसको ठीक समझकर दूसरों को समझाया है। परमात्मा के गुणों का ख्याल आते ही मनुष्य का पग सत्य मार्ग की ओर हो जाता है। यह कार्य मनुष्य को नेक बनाने में बड़ी सहायता पहुँचाता है और सबकी भलाई करने का ध्यान सामने आता है। सदैव उसकी याद से अपने दिल को सदा प्रसन्न करो, उसको भूलकर भी कभी मत भूलो।

ईश्वर कैसा है, कहाँ है और किस प्रकार का हैं? इस समस्या के

असली रूप को कोई नहीं जानता, परन्तु हर एक मनुष्य अपनी बुद्धि के अनुसार उसे समझने की चेष्टा करता है। किसी ने उसे सर्व-व्यापक बतलाया, परन्तु फिर भी परिश्रम करने पर स्वयं उसका पता न पाया। किसी जगह जाओ, कहीं चक्कर लगाओ, उसकी बातें सुनो और सुनाओ—परन्तु उसका भेद हाथ नहीं आता है, सुननेवालों ने क्या सुना, बतानेवालों ने क्या बताया, ठीक दिल में नहीं समाता है। किसी ने उसको एकदेश व्यापी माना है, परन्तु वह देश अथवा स्थान कैसा है, कहाँ पर है इसे कोई न जान सका। आज तक उसका पार किसी ने न पाया, किसी ने भगवान् की मूर्त्ति बनाकर बड़ी धूमधाम से मन्दिर में बैठाया है, घण्टा-घड़ियाल बजाकर सुलाना, जगाना, नहलाना, भोग लगाना उसको ईश्वर मानकर प्रेम से सिर को झुकाना, यह सब-कुछ देखने में आता है पर इन सब बातों से मनुष्य का विचार साफ़ न होकर उलझता ही जाता है। कोई इसी के वैराग्य में संसार को छोड़ जाता है और फिर कुछ समय के बाद संसार के अधीन नज़र आता है। कोई योगियों की खोज में फिर रहा है और कोई फ़कीरों की सङ्गत में घिर रहा है। कोई अपने-आपको 'अहं ब्रह्म' कहता है, परन्तु उसकी शक्ति को अपने में नहीं देख पाता। कोई किसी स्थान को पवित्र जानकर उस जगह जाना पुण्य समझता है और कोई नदी में गोता लगाने को शुभ कर्म मानता है, कोई ईश्वर को मिलने के लिए दान करता है और कोई गुरु-मन्त्र लेकर संसार-सागर से तरना चाहता है। इस प्रकार झंझटों में पड़कर बिना मतलब की बात-चीत को बढ़ाकर ईश्वर-भक्ति का सच्चा उपाय हाथ से जाता रहा। कई प्रकार के सम्प्रदाय हो गये, लोग ईश्वर को भूलकर मनुष्यों के पुजारी हो गये। एक ने दूसरे पर आघात किया, इसलिए सबके सब ईश्वर की पहचान से दूर हो गये, परन्तु जो लोग इन सम्प्रदायों के झगड़ों से दूर हो गये उन सबकी एक राय है। वे सब बुद्धिमान् हैं और सब इस रास्ते के दीवाने हैं। जो सचाई को जानकर मस्त हैं, वे बुद्धिमान् और पूर्ण-विश्वासी हैं, बाकी सब अन्धविश्वासी हैं और मोह की दुनिया में फँसे हुए हैं।

जिस समय जीव को अपनी योग्यता का ज्ञान हो जाता है उसी समय शान्ति प्राप्त होती है। जन्म-मरण और सांसारिक सुख-दुःख की प्रदर्शनी से दूर होकर आत्मस्वरूप का उदय हो जाता है । दुःख का परदा दूर हो जाता है और अन्तःकरण शुद्ध होता है। अज्ञान का समूह ज्ञान-अग्नि से जल गया जैसे कोई अग्नि में गिरते ही प्रकाश की अवस्था में बदल गया। जिधर देखता हूँ उसकी महिमा चारों ओर नज़र आती है। इस अवस्था में न किसी से मित्रता है न वैर, जङ्गल और शहर सब एक-समान हैं। यहाँ हर प्रकार से प्रसन्नता है—न कोई सताता है, न सताया जाता है। कैसा अच्छा भक्ति-मार्ग है, जिसके सुनने-सुनाने में भी आनन्द आता है। क्या अजीब बात है जिसके दर्शन के लिए मारे-मारे फिरते हैं कहीं-कहीं तो वह सामने खड़ा

दीखता है फिर पता नहीं चलता कि वह किस ओर अदृश्य हो गया। दिल में ही उसका ज्ञान उदय हुआ, दिल में ही इसका ध्यान उत्पन्न हुआ फिर दिल ने ही उससे एक प्रश्न किया—हे ईश्वर! आपने मुझे अपना भेद बताया जोकि कठिनता से मिलता है। अब फिर कठिनाई में फँसाना चाहते हैं। अब आप बताएँ—कहाँ जाओगे, अपने-आपको कहाँ छिपाओगे प्रभो! आप सामने खड़े हँसते हो, लोप होना चाहते हो, पर कहाँ जाओगे, कोई छिपने को जगह नहीं है। यह साक्षात्कार तेरे सच्चे भक्त की भक्ति का फल है।

***

वेद प्रकाशन के सम्बन्ध में

हमारी हार्दिक इच्छा थी कि दिसम्बर में हम चारों वेद [मूलमात्र] पाठकों के हाथों में पहुँचा दें, परन्तु इस इच्छा की पूर्ति में समय लगेगा। वेद का कम्पोजिङ्ग ही कठिन काम है, फिर उसमें स्वर लगाना और भी कठिन है। दो व्यक्ति एक दिन में आठ पृष्ठों पर स्वर लगा पाते हैं। काम वैसे ही बहुत कठिन था, एक और उत्तरदायित्व सिर पर ले लिया। पहले केवल स्वामीजी (श्री स्वामी जगदीश्वरानन्दजी) ही प्रूफ़ पढ़ते थे, परन्तु अब चार अन्य विद्वानों से पढ़वाने का भी निर्णय ले लिया है। वेद-जैसा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ बार-बार नहीं छपता है। मेरी भी और स्वामीजी की भी यह इच्छा है कि अब तक जितने संस्करण छपे हैं, यह उन सभी से उत्कृष्ट, भव्य और दिव्य हो। पाठक भी देखकर भाव-विभोर हो उठें। विद्वान् भी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करें।

हमारा पूरा प्रयत्न होगा कि ग्रन्थ में आदि से अन्त तक एक भी अशुद्धि न हो। मुद्रण भी नयनाभिराम हो, अतः पाठक कुछ प्रतीक्षा करें। ऋग्वेद और यजुर्वेद कम्पोज हो चुके हैं। स्वर लग रहे हैं। दिसम्बर तक चारों वेदों के कम्पोज हो जाने की आशा है। प्रूफ़ रीडिंग हो रही है। एक-एक विद्वान् दो-दो मास तो लगा ही देगा। प्रूफ़ की दो-दो, तीन-तीन प्रतियाँ निकालकर विद्वानों की सेवा में एक साथ भेजी जाएँगी, जिससे कार्य शीघ्र सम्पन्न हो सके।

आशा है, पाठक धैर्य रक्खेंगे।

आपको 'वेदप्रकाश' के माध्यम से प्रगति की निरन्तर सूचना मिलती रहेगी।

—अजय कुमार

आचार्य उदयवीर शास्त्री ग्रन्थावली

न्यायदर्शनम् भाष्य जो शास्त्र हमें तर्क-वितर्क का ज्ञान देता है, हमारे भीतर की बन्द आँखों को खोलकर हमें तर्क करने का ज्ञान और साइंस प्रदान करता है, उसी का नाम न्यायशास्त्र है और वही न्यायदर्शन है। रूखे व दुरूह कहे जानेवाले इस विषय को लेखक ने अत्यन्त सुबोध शैली में प्रस्तुत किया है। मूल्य : रु० १५०-००

वैशेषिकदर्शनम् भाष्य सृष्टि-रचना में जो सूक्ष्म मूल तत्त्व हैं उनका विज्ञानपरक विवेचन इस दर्शन में किया गया है। इसमें पदार्थों के धर्म की व्याख्या है। यह ज्ञान भी सभी के लिए उपयोगी और अनिवार्य है।

मूल्य : रु० १२५-००

सांख्यदर्शनम् भाष्य लम्बे समय तक यह कुतर्क चलता रहा है कि 'सांख्यदर्शन' अनीश्वरवादी है। इस भ्रान्ति का उन्मूलन करने के लिए आचार्य उदयवीर जी को तत्सम्बन्धी विपुल साहित्य, इतिहास, वाग्जाल और विविध भाष्यों का अध्ययन-चिन्तन-मनन करके इस सत्य को उघाड़ना पड़ा है कि सांख्यदर्शन अन्य दर्शनशास्त्रों का ही पूरक है। विषय गूढ़ है, किन्तु सरलता से समझा जा सकता है। मूल्य : रु० १००-००

योगदर्शनम् भाष्य योग का सर्वोच्च लक्ष्य है मोक्षरूप परमानन्द की प्राप्ति। मानव-जीवन की समस्त क्रियाओं का लक्ष्य भी 'ब्रह्म का साक्षात्कार' है। 'योगदर्शन' इसी लक्ष्य-प्राप्ति का साधन है। योग-सूत्रों की सर्वाङ्ग एवं सम्पूर्ण व्याख्या जिस रोचक शैली में आचार्य उदयवीर जी ने की है, उसे विद्वज्जनों और जनसाधारण ने मुक्तकण्ठ से सराहा है।

मूल्य : रु० १००.००

वेदान्तदर्शनम् भाष्य (ब्रह्मसूत्र) महर्षि वेदव्यास बादरायण ने ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को प्रमाणित करने के लिए ब्रह्मसूत्रों की रचना की थी। लेखक ने ब्रह्मसूत्र पर अपना निष्पक्ष व निर्भ्रान्त विद्योदयभाष्य प्रस्तुत करके हमारे वैदिक ज्ञान-विज्ञान को पुनः सार्वभौम और सार्वशिरोमणि कर दिखाया। मूल्य : रु० १८०-००

मीमांसादर्शनम् भाष्य मध्यकाल में कुछ ऐसी विडम्बना हुई कि विरोधी मतों की देखादेखी वैदिक वाक्यों के अर्थों में भी अनर्थ होने लगा। यज्ञों में भी पशु और नर बलि मान्य हो गई। आचार्य उदयवीर जी अन्य दर्शनों के भाष्य के बाद, जीवन के अंतिम वर्षों में मीमांसा-दर्शन के तीन ही अध्यायों का भाष्य करके दिवंगत हो गए। इस भाष्य की विशेषता यह है कि विद्वानों की दृष्टि में यह शास्त्र-सम्मत भी है और विज्ञानपरक भी। यज्ञों में पशु हिंसा की शंकाओं का सहज समाधान करके विद्वान् भाष्यकार ने पाठकों और शोधकर्ताओं का मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

मूल्य : रु० ३५०-००

सांख्यदर्शन का इतिहास सांख्यदर्शन के इतिहास पर व्याप्त भ्रान्तियों को मिटाने के लिए लेखक ने इसके इतिहास का मन्थन व मनन किया। इतिहास और दर्शन का यह अनूठा संगम है। कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया।

मूल्य : रु० २५०-००

सांख्यसिद्धान्त सांख्यसिद्धान्त में दो प्रकार के मूल तत्त्वों का विवेचन है। एक है 'पुरुष' और दूसरा 'प्रकृति'। लेखक ने वर्षों के गहन अनुशीलन व शोध के पश्चात् तटस्थ और निष्पक्ष भाव से विभिन्न मन्तव्यों का तुलनात्मक विवेचन करके इस ग्रन्थ की रचना की है। मूल्य : रु० २००-००

वेदान्तदर्शन का इतिहास इतिहास चाहे राजा-महाराजाओं का हो अथवा दार्शनिक साहित्य का, उसकी उपयोगिता इसी में है कि वह सत्य का बोध कराए। कुछ वर्ष पहले तक यह कहना कठिन था कि ब्रह्मसूत्रों के रचयिता व्यास और बादरायण एक ही व्यक्ति थे या दो भिन्न-भिन्न इसी प्रकार अचार्य शंकर के काल को कोई सुनिश्चित नहीं कर पाया था। इस सन्दर्भ में आचार्य उदयवीर शास्त्री जी ने जिस सहजता से भ्रान्तियों का उन्मूलन किया है, उसकी विद्वान पाठकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मूल्य : रु० २००-००

प्राचीन सांख्य-सन्दर्भ सांख्यशास्त्र की अनेक आचार्यों ने विवेचना की। सैकड़ों वर्षों के अन्तराल में किन-किन आचार्यों ने इसके भाष्य किये, यह सब अंधकार के गर्त में रहा। लेखक ने यत्र-तत्र बिखरे इतिहास की कड़ियाँ जोड़ीं तथा सांख्यशास्त्र के व्याख्यापरक ग्रन्थों को समझने और ऐतिहासिक दृष्टि से इस 'दर्शन' के क्रमिक विकास को जानने के लिए उपयोगी बनाया। मूल्य : रु० १००-००

वीर तरङ्गिणी श्री उदयवीर शास्त्री को पाठक प्रायः योग, वेदान्त, सांख्य आदि दर्शनों के प्रकाण्ड पंडित के रूप में ही जानते हैं। वे कवि और कथाकार भी थे, आलोचक और पुरा-मर्मज्ञ भी—यह पता चलता है इस विविधा से।

मूल्य : रु० २५०-००

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-प्रदायिनी
महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती की
सरल-सुबोध आध्यात्मिक पुस्तकें

आनन्द गायत्री कथा	१२-००
एक ही रास्ता	१२-००
शंकर और दयानन्द	८-००
मानव जीवन-गाथा	१३-००
सत्यनारायण व्रत कथा	५-००
भक्त और भगवान	१२-००
उपनिषदों का सन्देश	१६-००
घोर घने जंगल में	२०-००
मानव और मानवता	३०-००
प्रभु मिलन की राह	२०-००
यह धन किसका है ?	२०-००
बोध-कथाएँ	१६-००
दो रास्ते	१५-००
दुनिया में रहना किस तरह ?	१५-००
तत्वज्ञान	२०-००
प्रभु-दर्शन	१५-००
प्रभु-भक्ति	१२-००
महामन्त्र	१२-००
सुखी गृहस्थ	६-००
त्यागमयी देवियाँ	८-००

अंग्रेजी पुस्तकें

Anand Gayatry Katha	30-00
The Only Way	30-00
Bodh Kathayen	40-00
How To Lead Life?	30-00

जीवनी

महात्मा आनन्द स्वामी (उर्दू)	१०-००
महात्मा आनन्द स्वामी (हिन्दी)	२५-००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत
विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें

महाभारतम् (तीन खण्ड)	६००-००
वाल्मीकि रामायण	१७५-००
षड्दर्शनम्	१५०-००
चाणक्यनीति दर्पण	६०-००
विदुरनीतिः	४०-००
ब्रह्मचर्य गौरव	९-००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	९-००
दिव्य दयानन्द	१२-००
कुछ करो कुछ बनो	१२-००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१२-००
आदर्श परिवार	१५-००
वैदिक उदात्त भावनाएँ	१५-००
वेद सौरभ	१२-००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	२५-००
वैदिक विवाह पद्धति	८-००
ऋग्वेद सूक्ति सुधा	२५-००
यजुर्वेद सूक्ति सुधा	१२-००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	१५-००
सामवेद सूक्ति सुधा	१२-००
ऋग्वेद शतकम्	८-००
यजुर्वेद शतकम्	८-००
सामवेद शतकम्	८-००
अथर्ववेद शतकम्	८-००
भक्ति संगीत शतकम्	६-००
चमत्कारी ओषधियाँ	१२-००
घरेलू ओषधियाँ	१२-००
चतुर्वेद शतकम् (सजिल्द)	५०-००
स्वर्ण पथ	१२-००
प्रार्थना लोक	प्रेस में

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	४०-००
वेद-मीमांसा	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	५०-००
सृष्टि विज्ञान और विकासवाद	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	४०-००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	१५०-००
दयानन्द जीवन चरित	लेखक : देवेन्द्र मुखोपाध्याय अनु० : पं० घासीराम	२५०-००
शतपथब्राह्मण (तीन खण्ड)	अनु० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	१८००-००
महात्मा हंसराज (जीवनी)	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	६०-००
महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (चार खण्ड)	लेखक-सम्पादक प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	२४०-००
आर्य सूक्ति सुधा	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	१२-००
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (ग्यारह खण्ड)	ले० स० डॉ० भवानीलाल भारतीय तथा प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	६६०-००
चयनिका	क्षितीश वेदालंकार	१२५-००
वैदिक मधुवृष्टि	पं० रामनाथ वेदालंकार	६०-००
वेदोद्यान के चुने हुए फूल	आ० प्रियव्रत वेदवाचस्पति	५०-००
महाभारत सूक्तिसुधा	पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण	४०-००
श्यामजी कृष्ण वर्मा	डॉ० भवानीलाल भारतीय	२४-००
आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय	डॉ० भवानीलाल भारतीय	२५-००
कल्याणमार्ग का पथिक (स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी)	डॉ० भवानीलाल भारतीय	प्रेस में
आर्यसमाज के बीस बलिदानी	डॉ० भवानीलाल भारतीय	१५-००
धर्म का स्वरूप	डॉ० प्रशान्त वेदालंकार	५०-००
ऋषि बोध कथा	स्वामी वेदानन्द सरस्वती	१०-००
वैदिक धर्म	स्वामी वेदानन्द सरस्वती	२५-००
ईश्वर का स्वरूप	सुरेशचन्द्र वेदालंकार	प्रेस में
सहेलियों की वार्ता	सुरेशचन्द्र वेदालंकार	२०-००
सन्ध्या रहस्य	पं० विश्वनाथ विद्यालंकार	२५-००
आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ?	प्रो० रामविचार एम० ए०	४-००
वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय	ओम्प्रकाश त्यागी	६-००
पूर्व और पश्चिम	नित्यानन्द पटेल	३५-००
सन्ध्या विनय	नित्यानन्द पटेल	६-००
गीत सागर	पं० नन्दलाल वानप्रस्थी	२५-००
वेद भगवान बोले	पं० वा० विष्णुदयाल (मारीशस)	१५-००
हैदराबाद के आर्यों की साधना व संघर्ष	पं० नरेन्द्र	१५-००
आचार्य शंकर का काल	आ० उदयवीर शास्त्री	१०-००

याज्ञिक आचार-संहिता	पं० वीरसेन वेदश्रमी	४५-००
प्राणायाम विधि	महात्मा नारायण स्वामी	२-००
प्रेरक बोध कथाएँ	नरेन्द्र विद्यावाचस्पति	१५-००
ओंकार गायत्री शतकम्	कवि कस्तूरचन्द	३-००
जीवात्मा	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	प्रेस में
सन्ध्या : क्या, क्यों, कैसे	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	प्रेस में
विवाह और विवाहित जीवन	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	१८-००
जीवन गीत	धर्मजित् जिज्ञासु	१२-००
पंचमहायज्ञविधि	महर्षि दयानन्द	३-००
व्यवहारभानु	महर्षि दयानन्द	४-००
आर्योद्देश्यरत्नमाला	महर्षि दयानन्द	१-५०
स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश	महर्षि दयानन्द	१-५०
ब्रह्मचर्यसन्देश	सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	२५-००
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता	पं० सत्यपाल विद्यालंकार	१५-००

WORKS OF SVAMI SATYAPRAKASH SARASVATI

Founders of Sciences in Ancient India (Two Vols.)	500-00
Coinage in Ancient India (Two Vols.)	600-00
Geometry in Ancient India	350-00
Brahmgupta and His Works	350-00
God and His Divine Love	5-00
The Critical and Cultural Study of Satapath Brahman	In Press
Speeches, Writings & Addresses Vol.I : VINCITVERITAS	150-00
Speeches Writings & Addresses Vol.II : ARYA SAMAJ; A RENAISSANCE	150-00
Speeches, Writings & Addresses Vol. III : DAYANAND ; A PHILOSOPHER	150-00
Speeches, Writings & Addresses Vol. IV THREE LIFE HAZARDS	150-00

कर्म काण्ड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका	३-००	संध्या-हवन-दर्पण (उर्दू)	८-००
पंचयज्ञ प्रकाशिका	८-००	सत्संग मंजरी	६-००
वैदिक संध्या	१-००	Vedic Prayer	3-00
सामाजिक पद्धतियाँ (मदनजीत आर्य)	१२-००		

घर का वैद्य

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको आसानी से उपलब्ध हों तो गोली, पुड़िया, कैप्सूल या इन्जेक्शन की क्या जरूरत है ?

घर का वैद्य—प्याज	७-००	घर का वैद्य—हल्दी	७-००
घर का वैद्य—लहसुन	७-००	घर का वैद्य—बरगद	७-००
घर का वैद्य—गन्ना	७-००	घर का वैद्य—दूध-घी	७-००
घर का वैद्य—नीम	७-००	घर का वैद्य—दही-मट्ठा	७-००
घर का वैद्य—सिरस	७-००	घर का वैद्य—हींग	७-००
घर का वैद्य—तुलसी	७-००	घर का वैद्य—नमक	७-००
घर का वैद्य—आँवला	७-००	घर का वैद्य—बेल	७-००
घर का वैद्य—नींबू	७-००	घर का वैद्य—शहद	७-००
घर का वैद्य—पीपल	७-००	घर का वैद्य—फिटकरी	७-००
घर का वैद्य—आक	७-००	घर का वैद्य—साग-भाजी	७-००
घर का वैद्य—गाजर	७-००	घर का वैद्य—अनाज	७-००
घर का वैद्य—मूली	७-००	घर का वैद्य—फल-फूल	७-००
घर का वैद्य—अदरक	७-००	घर का वैद्य—धूप-पानी	१५-००

सभी छब्बीस पुस्तकें छः आकर्षक जिल्दों में भी उपलब्ध

घर का वैद्य-१ (प्याज, लहसुन, गन्ना, नीम, सिरस)	४५-००
घर का वैद्य-२ (तुलसी, आँवला, नींबू, पीपल, आक)	४५-००
घर का वैद्य-३ (गाजर, मूली, अदरक, हल्दी, बरगद)	४५-००
घर का वैद्य-४ (दूध-घी, दही-मट्ठा, हींग, नमक, बेल)	४५-००
घर का वैद्य-५ (शहद, अनाज, फिटकरी, साग-भाजी, फल-फूल)	४५-००
घर का वैद्य—धूप-पानी	४०-००

चित्र

स्वामी दयानन्द (झण्डेवाला)	१६" × २२" बहुरंगी	६-००
स्वामी दयानन्द (कुर्सी)	१८" × २२" एक रंग	३-००
स्वामी दयानन्द (आसन)	१८" × २२" एक रंग	३-००
स्वामी श्रद्धानन्द	१८" × २२" एक रंग	३-००
गुरु विरजानन्द	१८" × २२" एक रंग	३-००
पण्डित लेखराम	१८" × २२" एक रंग	३-००
स्वामी दर्शनानन्द	१८" × २२" एक रंग	३-००
पं० गुरुदत विद्यार्थी	१८" × २२" एक रंग	३-००
महात्मा हंसराज	१८" × २२" एक रंग	३-००

बाल साहित्य

आर्य नेताओं की बालोपयोगी जीवनियाँ

महर्षि दयानन्द	त्रिलोकचन्द विशारद	४-५०
गुरु विरजानन्द	त्रिलोकचन्द विशारद	४-५०
स्वामी श्रद्धानन्द	त्रिलोकचन्द विशारद	४-५०
धर्मवीर पं० लेखराम	त्रिलोकचन्द विशारद	३-००
मुनिवर पं० गुरुदत्त	त्रिलोकचन्द विशारद	३-००
स्वामी दर्शनानन्द	सत्यभूषण वेदालंकार	३-००
महात्मा हंसराज	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	४-५०
वीतराग सेनानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	४-५०
तपोधन महात्मा नारायण स्वामी	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	५-५०
देवतास्वरूप भाई परमानन्द	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	५-५०
नैतिक शिक्षा—प्रथम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	२.५०
नैतिक शिक्षा—द्वितीय	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	२.५०
नैतिक शिक्षा—तृतीय	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	३.५०
नैतिक शिक्षा—चतुर्थ	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	४-५०
नैतिक शिक्षा—पंचम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	४.५०
नैतिक शिक्षा—षष्ठ	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	५.५०
नैतिक शिक्षा—सप्तम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	५.५०
नैतिक शिक्षा—अष्टम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	५.५०
नैतिक शिक्षा—नवम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	८००
नैतिक शिक्षा—दशम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	८००
ब्रह्मचर्य गौरव	स्वामी जगदीश्वरानन्द	९००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	स्वामी जगदीश्वरानन्द	९००
स्वर्ण पथ	स्वामी जगीदश्वरानन्द	१२००
आचार्य गौरव	ब्र० नन्दकिशोर	५००
त्यागमयी देवियाँ	महात्मा आनन्द स्वामी	८००
हमारे बालनायक	सुनील शर्मा	८००
देश के दुलारे	सुनील शर्मा	८००
हमारे कर्णधार	सुनील शर्मा	८००
आदर्श महिलाएँ	नीरू शर्मा	८००
कथा पच्चीसी	स्वामी दर्शनानन्द	८००
बाल शिक्षा	स्वामी दर्शनानन्द	२.५०
वैदिक शिष्टाचार	हरिश्चन्द्र विद्यालंकार	३००
दयानन्द चित्रावली	पं० रामगोपाल विद्यालंकार	२५००
आर्य सूक्ति सुधा	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	१२-००

नई प्रचारित पुस्तकें

आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे : लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। शंकराचार्य मूलतः वेदान्ती या अद्वैतवादी नहीं थे। ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में इसका संकेत मिलता है। स्वामीजी ने इस मान्यता की पुष्टि में शंकराचार्य के ग्रन्थों से अनेक प्रमाण उद्धृत किए हैं। **मूल्य : रु० ४०-००**

आर्यसमाज के बीस बलिदानी : लेखक—डॉ० भवानीलाल भारतीय। आर्यसमाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ जानेवाले उन बीस आर्यों की संक्षिप्त बालोपयोगी जीवनियाँ, जिन्हें पढ़कर बच्चों, नवसाक्षरों तथा प्रौढ़ों को सत्प्रेरणा मिलेगी। पुरस्कार, उपहार देने योग्य। **मूल्य : रु० १५-००**

आचार्य गौरव : लेखक—ब्र० नन्दकिशोर। आचार्य-शिष्य संबंधों की मार्मिक झांकी प्रस्तुत की गई है। जहां शिष्यों को कर्त्तव्य-बोध कराया गया है, वहीं आचार्यों की राष्ट्र-निर्माण की दिशा भी दर्शायी गई है। **मूल्य : रु० ५-००**

महात्मा नारायण स्वामी : लेखक—प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु। महात्माजी का जीवन बहुत घटनापूर्ण है। उनके पास कोई ऊँची डिग्री नहीं थी, न ही वे धनवान् थे, परन्तु अपने चरित के कारण वे ऊँचे विचारक, सुधारक, महात्मा, योगी, लेखक व पूज्य नेता बन गए। इस स्वनिर्मित जीवन चरित से युवक-युवतियाँ बहुत कुछ सीख सकते हैं। **मूल्य : रु० ५-५०**

बहुत दिनों बाद प्रकाशित पुस्तकें

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार : लेखक—पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार। इस ग्रन्थ में वैदिक विचारधारा को विज्ञान की कसौटी पर परखने का प्रयत्न किया गया है, ताकि हमारी नई पीढ़ी जिन मान्यताओं को अवैज्ञानिक कह कर छोड़ती जा रही है, उन पर नई दृष्टि से सोचें। **मूल्य : रु० १५०-००**

षड्दर्शनम् : लेखक—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती। वैदिक साहित्य में दर्शनों का विशेष महत्त्व है। वेद में ईश्वर, जीव, प्रकृति, पुनर्जन्म, मोक्ष, योग, कर्मसिद्धान्त, यज्ञ आदि का बीजरूप में वर्णन है, दर्शनों में इन्हीं विचार-बिन्दुओं पर विस्तृत विवेचन है। **मूल्य : रु० १५०-००**

सामाजिक पद्धतियाँ : लेखक—महाशय मदनजित आर्य, सन्ध्या, हवन-मंत्र, यज्ञोपवीत, प्रथम वस्त्र-परिधान, जन्म-दिवस, विवाह पद्धति, सगाई पद्धति, सेहरा बन्दी, शैंत, मिलनी, गार्हपत्याग्नि पद्धति, व्यापार-सूत्र, दुकान मुहूर्त, अन्त्येष्टि क्रिया आदि आवश्यक सामाजिक पद्धतियों के संग्रह। **मूल्य : रु० १२-००**

शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

आर्य सूक्ति सुधा : लेखक—प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु। आर्य सामाजिक साहित्य के इतिहास में प्रथम बार ही आर्यसमाज के इतने विद्वानों, महात्माओं व संन्यासियों की वैदिक सिद्धान्तों पर सूक्तियाँ संग्रहीत करके छापा जा रहा है। वैदिक धर्मियों के लिए यह पुस्तक ज्ञानकोश है।

दीप्ति : लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। विवादास्पद विषयों का विवेचन। स्वामी जी के कुछ महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह।

वैदिक ज्ञानधारा : संकलनकर्त्ता—प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु। आर्यसमाज की पहली व दूसरी पीढ़ी के संन्यासी, महात्मा, नेता व विद्वान् सभी उच्च कोटि के गवेषक, लेखक व वक्ता थे, इन्हीं पुराने आर्य लेखकों, विचारकों के भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गए महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह।

Bodh Kathayan : Mahatma Anand Swami : Translation of Swamiji's book 'बोध कथाएँ'।

How to Lead Life : Mahatma Anand Swami, Translation of Swamijis book 'दुनिया में रहना किस तरह'?

पुस्तक परिचय

स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (ग्यारह खण्ड) (सं० भवानीलाल भारतीय) इसमें संकलित हैं उनके समस्त ग्रन्थ, प्रमुख भाषण, आत्मकथा तथा नवलिखित सचित्र जीवन-चरित। **प्रथम खण्ड** स्वामी जी की आत्मकथा, **द्वितीय खण्ड** धर्मोपदेश, **तृतीय खण्ड** आदिम सत्यार्थप्रकाश व आर्यसमाज के सिद्धान्त, आर्यों के नित्य कर्म, सन्ध्या-विधि, ईसाई मत और आर्य समाज, छुआछूत, **चतुर्थ खण्ड** पं० लेखराम (जीवनी), बन्दीगृह के विचित्र अनुभव, **पंचम खण्ड** इनसाइड कांग्रेस (लेखों का संग्रह), हिन्दू संगठन **षष्ठ खण्ड** पारसी मत और वैदिक मत, वेद और आर्यसमाज, मुक्ति सोपान, मातृभाषा का उद्धार, रामायण रहस्य कथा, गोपाल कृष्ण गोखले से पत्र-व्यवहार, **सप्तम खण्ड** गोपीनाथ पर मुकद्दमा (एक ऐतिहासिक मुकद्दमा), **अष्टम व नवम खण्ड** कुलियात संन्यासी के लेखों का हिन्दी अनुवाद, **दशम खण्ड** आर्यसमाज, उसके संस्थापक तथा उसके शत्रु और पटियाला अभियोग, **एकादश खण्ड** स्वामीजी का विस्तृत सचित्र जीवन चरित डॉ० भवानीलाल भारतीय की कलम से।

शतपथ ब्राह्मण (तीन खण्ड) : पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय सं० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती। वेदार्थ और कर्मकाण्ड का अत्यन्त प्रसिद्ध एवं अति प्राचीन ग्रन्थ, मूल संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित। मूल संस्कृत-भाग जर्मनी के विद्वान् अल्बेर्त वेबेर द्वारा १८४९ में सम्पादित एवं स्वर-सहित प्रकाशित पुस्तक से लिया गया।

चयनिका : क्षितीश वेदालंकार। पुस्तक में ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज, ईश्वर, वेद, सत्यार्थप्रकाश, शिक्षा, संस्कृति, धर्म, समाज, राजनीति, आर्य महापुरुष आदि चुने हुए लेखों का संग्रह है।

वैदिक मधुवृष्टि : डॉ० रामनाथ वेदालंकार। पुस्तक में परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, उपासना, माधुर्य, मानव-शरीर के महत्त्व, आचार्य-शिष्य, राष्ट्रोन्नति, शिक्षाशास्त्र, यज्ञ, चिकित्सा, योगसिद्धि, वैदिक काव्यालंकार, मानवता आदि विषयों पर निबन्ध हैं।

वेदोद्यान के चुने हुए फूल : आचार्य प्रियव्रत वेदावाचस्पति। इस पुस्तक में वेद, ईश्वर, सृष्टि, प्रलय, उपासना, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, राष्ट्रनिर्माण आदि विभिन्न विषयों से सम्बन्ध रखनेवाले कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वेद-मन्त्रों और सूक्तों का संग्रह है।

वेद मीमांसा : स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। यह वेद के अध्ययन-अनुसंधान की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इसमें पाश्चात्य एवं तदनुयायी भारतीय वेदालोचक विद्वानों के मतों की तीव्र आलोचना करते हुए सही भारतीय मत का प्रतिपादन करने का प्रयास किया गया है।

सृष्टि विज्ञान और विकासवाद : स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। पुस्तक में जीवन की उत्पत्ति, गर्भशास्त्र, लुप्तजन्तु शास्त्र, योग्यतम की विजय, श्रमिक विकास, भूगर्भशास्त्र, ज्ञान की उत्पत्ति और उसका संक्रमण आदि विषयों पर वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाण-पुरस्सर व तर्क-प्रतिष्ठित विवेचन हुआ है।

आर्यसमाज विषयक साहित्यिक परिचय : डॉ० भवानीलाल भारतीय। आर्यसमाज के इतिहास, इसके नियम, उपनियम, इसकी परिचयात्मक जानकारी तथा इसके सिद्धान्तों एवं कार्यों से संबंधित ग्रन्थों की परिपूर्ण सूची प्रस्तुत करने का प्रयास है।

वैदिक धर्म : वे०शा० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ। वैदिक धर्म के सभी मुख्य सिद्धान्तों के प्रतिपादक वेदमन्त्र दे दिए गए हैं। ईश्वर, जीव, प्रकृति, पुनर्जन्म, सृष्टि के आरम्भ में युवाओं की उत्पत्ति, मुक्ति से पुनरावृत्ति आदि अनेक विषयों का समावेश किया गया है।

वेद भगवान् बोले : पं० विष्णुदयाल (मॉरीशस) वेद वैदिक संस्कृति का मूलाधार हैं। संसार में जितना ज्ञान-विज्ञान, विधाएँ और कलाएँ हैं, उन सबका आदि-स्रोत वेद है। मॉरीशसवासी पं० विष्णुदयाल के वेदों पर लिखे गये महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह।

1995 का कैलेण्डर

महर्षि दयानन्द के झण्डे वाले बहुरंगी चित्र के साथ अब उपलब्ध है। साईज २२"×२८" बढ़िया आर्ट पेपर पर, सुन्दर छपाई। मूल्य ५००-०० रु० प्रति सैंकड़ा। आज ही अपना आदेश भेजें क्योंकि यह सीमित संख्या में ही छपा है।

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

महर्षि दयानन्द चरित

लेखक : देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

यह अनूठा जीवन चरित है। लेखक ने १५ वर्ष तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण करके जहां-जहां ऋषि गये थे, वहां जाकर, जिन-जिन लोगों से मुनि मिले थे, उन-उनसे मिलकर उनके जीवन की सामग्री एवं घटनाओं का संकलन किया था। इस प्रकार यह प्रामाणिक और खोजपूर्ण संस्करण है। इसके अनुवादक हैं पं० घासीराम।

२०×३०/८ आकार (कल्याण) में ६९० पृष्ठों का है। कम्प्यूटर से कम्पोज होकर उत्तम कागज पर छपा, सम्पूर्ण कपड़े की जिल्द में उपलब्ध।

मूल्य : रु० २५०-००

आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

आदि जगद्गुरु शंकराचार्य को नवीन वेदान्त का प्रवर्त्तक माना जाता है। वस्तुतः शंकराचार्य और अद्वैत वेदान्त पर्यायवाची बन गए हैं। परन्तु स्वामी विद्यानन्द जी की मान्यता है कि शंकर मूलतः वेदान्ती या अद्वैतवादी नहीं थे। ऋषि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में इसका संकेत मिलता है। स्वामी जी ने इस मान्यता की पुष्टि में शंकराचार्य के ग्रन्थों से अनेक प्रमाण उद्धृत किये हैं।

मूल्य : रु० ४०-००

हमारा १९९५ का बृहद् विशेषाङ्क :

दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह

यह ग्रन्थ 'दयानन्द चरित' आकार में २०×३०/८ लगभग ६०० पृष्ठ का सजिल्द होगा।

स्वामी दर्शनानन्द जी ट्रैक्ट लिखने की मशीन थे। जीवन में बहुत ट्रैक्ट लिखे। सब उर्दू में लिखे। अनेक विद्वानों ने उनका हिन्दी अनुवाद किया।

इस ग्रन्थ-संग्रह में हम दर्शनानन्द जी के ६४ ट्रैक्ट दे रहे हैं। ईश्वर विचार, ईश्वरप्राप्ति, वेद, मुक्ति, जीव का अनादित्व, गुरुकुल, भोला यात्री, द्वैतवाद आदि अनेक विषयों पर अत्यन्त खोजपूर्ण सामग्री इस ग्रन्थ में पाठकों को मिलेगी।

इस ग्रन्थ का सम्पादन करेंगे आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती।**

जिन मन्त्रों, सूत्रों और श्लोकों के पते नहीं हैं, उन्हें खोजकर देने का स्वामी जी का भरसक प्रयत्न रहेगा। आधुनिक साज-सज्जा से सुभूषित कलापूर्ण मुद्रण होगा। बढ़िया कागज होगा। इस ग्रन्थरत्न का मूल्य २५० रुपये होगा। परन्तु वेद-प्रकाश के सदस्यों को केवल १५० में मिलेगा। इसमें एक वर्ष तक वेदप्रकाश भी निःशुल्क मिलता रहेगा। विशेषाङ्क को भेजने का खर्च भी हम स्वयं वहन करेंगे।

ऐसा भव्य और दिव्य ग्रन्थ पहली बार छप रहा है। हम स्वामी दर्शनानन्द जी का सच्चा श्राद्ध कर रहे हैं। आर्य साहित्य में यह एक ठोस वृद्धि होगी।

हमारा 'वेदप्रकाश' के सदस्यों और पाठकों से निवेदन है कि वे स्वयं ग्राहक बनें और अन्यों को बनायें।

शीघ्रता करें। ग्रन्थ सीमित संख्या में ही छपेगा।

यदि पाठकों ने उत्साह दिखाया तो इसका दूसरा भाग भी देने का प्रयत्न करेंगे। यह मार्च ९५ में पाठकों को मिलेगा।

'वेद की मूल संहिताओं' के प्रकाशन योजना के लिए कई आर्यसमाजों ने हमारा उत्साह बढ़ाया है और इस योजना के लिए भी आर्यसमाज आगे आयें तो बृहद् विशेषांक प्रकाशित करने की योजना को बल मिलेगा तथा भविष्य में और अधिक ठोस योजनाओं पर कार्य करने की शक्ति मिलेगी।

प्रकाशक-मुद्रक अजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेद प्रकाश कार्यालय, ४४०८ नयी सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया।